चन्दामामा
दिसम्बर १९७२
७०
P

Photo by: **PREM SHARMA**

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS FRUITY SWEETS
25 Paise
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP

3

प्रत्येक पुस्तकालय में रखने योग्य!

★

'SONS OF PANDU'
Rs. 5-25

'THE NECTAR OF THE GODS'
Rs. 4-00

अंग्रेज़ी में रचित: लेखिका
श्रीमती मधुरम भूतलिंगम

भेंट देने व संग्रह करने योग्य
बालकोपयोगी पुस्तकें!

★

आज ही आदेश दें:

डाल्टन एजेन्सीस

'चन्दामामा बिल्डिंग्स'

मद्रास-२६

स्वान पेन
अंतरिक्ष युग के छात्रों के लिए
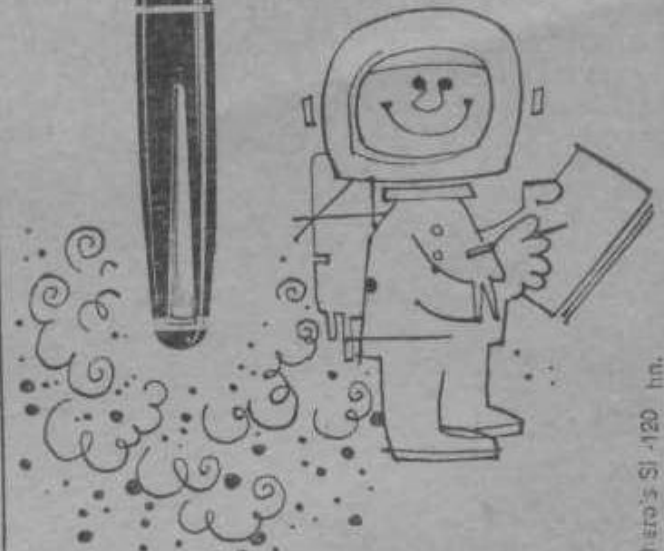
स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
अडवानी चेम्बर्स, फि. मेहता रोड, बम्बई-१
शाखा: २४ बी, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१

मुँह में पानी आ रहा है न?

अजी, जब सामने इतने कुरकुरे, खस्ता और स्वास्थ्यदायक क्रीम वेफ़र बिस्किट पड़े हों, तो मुंह में पानी तो आएगा ही ! आकर्षक पैकेटों में बंद, आठ अलग अलग रुचियों के सुरस और स्वादिष्ट वेफ़र.

इन्टरनैशनल क्रीम वेफ़र बिस्किट.

international

इन्टरनैशनल फ़ूड्स, जॉन्स लेन, गनफाउन्ड्री, हैद्राबाद.

mcm/if/1m - HN
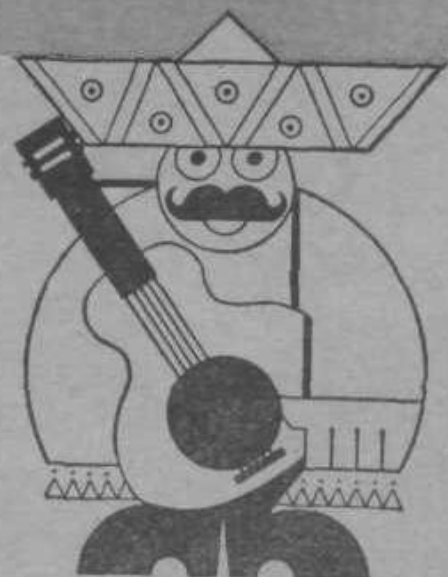
चन्दामामा
संस्थापक: नागिरेड्डी
संचालक: 'चक्रपाणी'
इस महीने की बेताल कथा "यश का साधन" एक अनोखे तथ्य का प्रतिपादन करती है। इस कथा का नायक गुणकीर्ति सत्व गुणवाला व्यक्ति है। "क्रियासिद्धि स्सत्वे भवति महताम्, नोपकरणे" (महात्मा के लिए क्रियासिद्धि उपकरणों के द्वारा नहीं, सत्व के द्वारा ही संभव है) कभी कहा गया है।
एक अच्छे शासन को गिराने के लिए किस प्रकार के कुतंत्र एवं षड्यंत्र रचे जाते हैं, दिवोदास की कथा (शिवपुराण) द्वारा विदित होता है।
वर्ष : २५ दिसंबर १९७२ अंक : ६
CHITRA

शत निष्को धनाढ्यश्च,
शतग्रामेण भूपतिः,
शताश्वः क्षत्रियो राजा,
शतश्लोकेन पंडितः । ॥ १ ॥

[सौ स्वर्णमुद्राओंवाला व्यक्ति धनी है, सौ गाँवों का अधिपति भूपाल है, सौ घोड़ोंवाला क्षत्रिय राजा है, सौ श्लोकों का ज्ञाता पंडित है ।]

शकटम् पंच हस्तेषु,
दश हस्तेषु वाजिनम्,
गजम् हस्त सहस्त्रेषु,
दुर्जनम् दूरतः त्यजेत् । ॥ २ ॥

[गाड़ी को पांच हाथ की दूरी पर, घोड़े को दस हाथ की दूरी में, हाथी को एक हज़ार हाथों की दूरी पर से तथा दुर्जन से दूर ही बचना चाहिए ।]

कृषितो नास्ति दुर्भिक्षम्,
जपतो नास्ति पातकम्,
मौनेन कलहो नास्ति,
नास्ति जागरतो भयम् । ॥ ३ ॥

[जो खेती करता है, उसे अकाल का डर नहीं होता, जो जप करता है, उसे पाप नहीं छूता, जो मौन रहता है, उसे कलह का डर नहीं होता, इसी प्रकार जो हमेशा जागता रहता है, उसे भय नहीं होता ।]

किसान और भेड़िया

फ्रान्स में आज जो बहुत बड़ा मैदान है। बहुत समय पूर्व उस प्रदेश में एक जंगल था। उस जंगल के जल जाने का कारण यों बताते हैं :

जंगल के आंचल में एक गरीब किसान अपनी पत्नी के साथ रहा करता था। एक दिन वह किसान दो बड़ी रोटियाँ ख़रीद कर जंगल में से घर लौट रहा था, तब एक बड़ा भेड़िया उसके मार्ग में आ खड़ा हुआ। उसने किसान को देख गुर्राया। उसके जबड़े भयंकर थे।

भेड़िये को देख किसान डर के मारे कांप उठा। उसका भागना भी नामुमक़िन था। भेड़िया का सामना करके वह उसे जीत नहीं सकता था। इतने में उसके मन में एक विचार आया। उसने भेड़िये से कहा– "भेड़िये, बेचारे तुम्हें भूख लगी होगी! यह थोड़ी सी रोटी खा लो।" इन शब्दों के साथ रोटी तोड़ कर एक टुकड़ा उसने भेड़िये के सामने डाल दिया। भेड़िया बड़े ही प्रेम के साथ रोटी खाने लगा। मौक़ा पाकर किसान आगे बढ़ने लगा।

किसान अभी काफ़ी दूर भी न गया था, पर उसे लगा कि भेड़िया उसका पीछा कर रहा है। "भेड़िये, तुम बड़े ही अच्छे हो, लो, थोड़ी सी और रोटी।" ये शब्द कहते किसान ने रोटी का एक और टुकड़ा भेड़िये के आगे डाल दिया और भागने लगा।

मगर अब भी भेड़िया उसका पीछा कर रहा था। किसान रोटी तोड़ कर एक एक करके टुकड़े फेंकता गया। भेड़िया भी रोटी के उन टुकड़ों को खाते किसान का पीछा करता गया।

आख़िर भागते-भागते किसान अपने घर के पास पहुँचा। अब उसके हाथ दूसरी रोटी का एक टुकड़ा मात्र बचा था।

फ्रांस की लोककथा

भेड़िया भी किसान के पीछे आ कर उसके घर के आगे बैठ गया।

किसान की पत्नी ने पूछा–"रोटियाँ कहाँ? रोटियों के साथ खाने के लिए मैं ने कांजी बनाकर तैयार रखी है।"

किसान की सांस फूल रही थी। उसने भेड़िये की ओर उंगली दिखायी।

"ओह भेड़िया है! इसीलिये तुम यूँ भाग कर आये हो? अच्छा हुआ कि तुम उसके मुँह में नहीं पड़े।" किसान की पत्नी ने कहा।

"मैं ने जो रोटियाँ ख़रीदीं, उन्हें भेड़िये को दे दिया।" किसान ने जवाब दिया।

"रोटियों को इस कमबख़्त भेड़िये ने खा डाला? तुम घर के भीतर आकर किवाड़ बंद कर दो, वरना वह तुम्हें और मुझे भी खा डालेगा।" किसान की पत्नी ने कहा।

किसान ने किवाड़ बंद करते हुए अपने हाथ में बचे रोटी के टुकड़े को भेड़िये के आगे डालते हुए कहा–"भेड़िये, इसे भी तुम खा लो।" फिर क्या था, उसने किवाड़ बंद कर कुंड़ी चढ़ा दी।

भेड़िये ने रोटी का वह टुकड़ा भी खा डाला और बड़ी देर तक वह उस घर के आगे बैठ रहा। घर के भीतर किसान दंपति सिर्फ़ कांजी पीने लगा। कांजी पीते हुए किसान की पत्नी भेड़िये को गालियाँ देती रही, जब भीतर किसान दंपति की बातचीत समाप्त हो गयी, तब भेड़िया जंगल की ओर चला गया।

इसके बाद कई महीने बीत गये। किसान दंपति ने बड़ी मेहनत करके थोड़ा धन इकट्ठा किया और उस धन से एक गाय खरीदने का निश्चय किया।

किसान वह धन लेकर जंगल से होते हुए हाट की ओर चल पड़ा। वह हाट में यह सोचते घूमता रहा कि उसके पास जो थोड़ा सा धन है, उसके लिए कम उम्र की गाय ख़रीदी जा सकती है, तब एक दुबला-पतला एवं लंबा आदमी उसके सामने आया। उसने किसान से पूछा–"क्या तुम गाय ख़रीदना चाहते हो?"

"जी हाँ, लेकिन बढ़िया गाय खरीदने के लिए मेरे पास ज़्यादा धन नहीं है।" किसान ने जवाब दिया।

"मेरी झोंपड़ी में कई गायें हैं। उन में से कोई शायद तुम्हें पसंद आवे?" उस बुजुर्ग ने कहा।

दोनों एक सुंदर मकान में पहुँचे। उस मकान के पिछवाड़े में गायों के लिए एक अलग झोंपड़ी बनी हुई थी। उस में कई गायें थीं।

"तुम सब से बढ़िया गाय चुन लो।" बुजुर्ग ने कहा। किसान एक दम आचरज में आ गया। ऐसा मौक़ा बराबर नहीं मिलेगा। इसलिए किसान ने उस में से बढ़िया गाय को चुन लिया।

"तुम ने बढ़िया गाय चुन ली है।" इन शब्दों के साथ उस बुजुर्ग ने गाय के गले में रस्सी डाल उस के छोर को किसान के हाथ थमा दिया।

इस के बाद उस बुजुर्ग ने अपनी जेब में से एक डिबिया निकाल कर कहा-"यह डिबिया तुम्हारी पत्नी के लिए मेरी ओर से भेंट है। इस में क्या है, इसे एकांत में ही तुम्हारी पत्नी को देखना चाहिये।"

किसान ने आश्चर्य के साथ उस डिबिया को लेते हुए पूछा-"आप की यह कृपा हम पर क्यों है?"

बुजुर्ग ने हंस कर कहा-"तुम ने एक दिन मुझ पर दया करके दो रोटियाँ दी हैं न? में ही वह भेड़िया हूँ। मैं भले
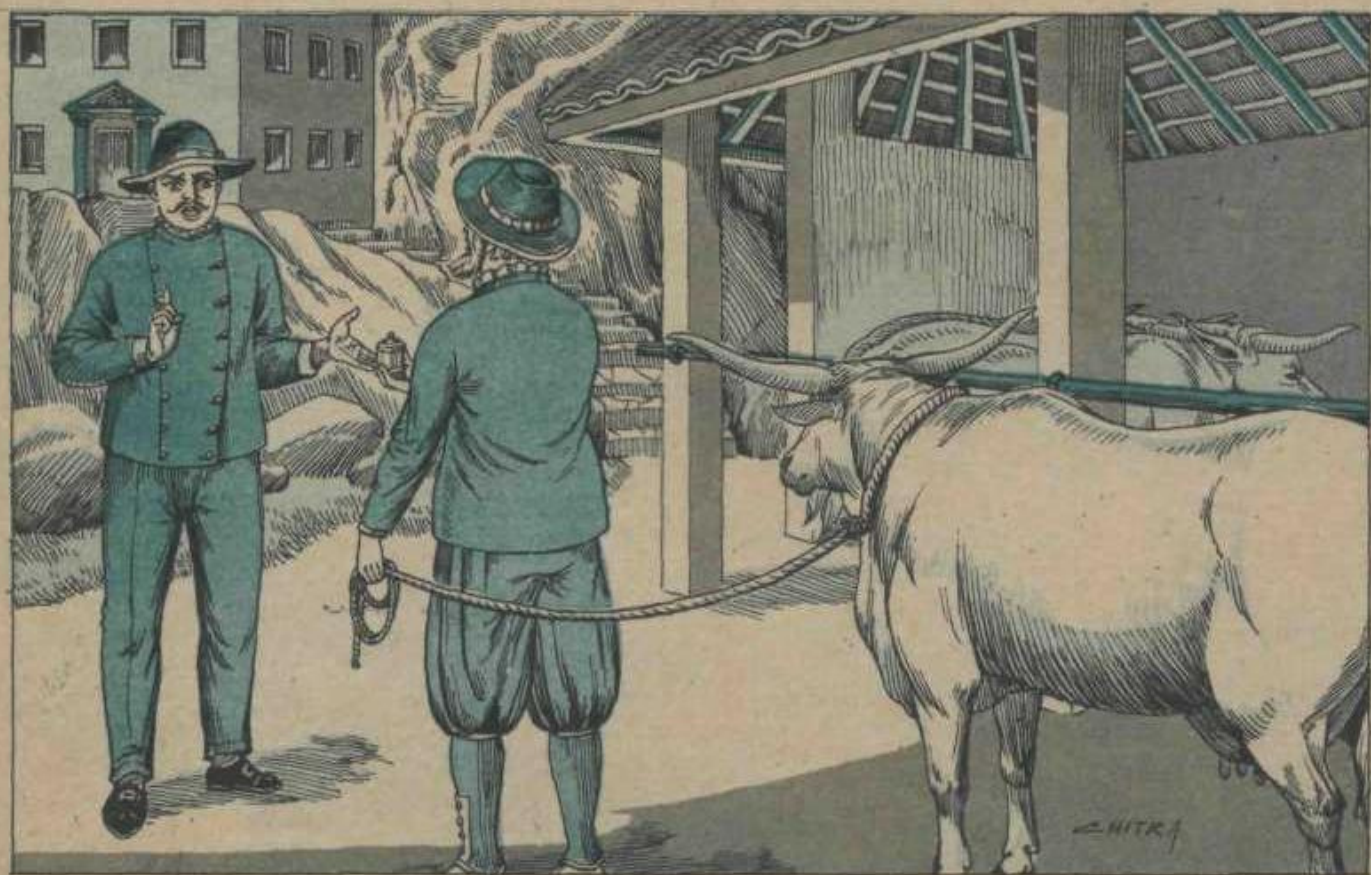
लोगों के लिए भला आदमी हूँ, और बुरे लोगों के लिए बुरा आदमी हूँ। अब तुम जाओ, भगवान तुम्हारा भला करें!"

ये शब्द सुनने पर किसान को विस्मय एवं आनंद भी हुआ। इसके बाद वह गाय को लेकर उसी जंगल से होकर घर की तरफ़ चल पड़ा।

रास्ते में किसान के मन में यह जानने का कुतूहल बढ़ता ही गया कि डिबिया में क्या है। उस भेड़ियेवाले बुजुर्ग ने तो अपनी पत्नी को एकांत में ही डिबिया खोलने को क्यों बताया है? किसान ने डिबिया निकाल कर उलट-पलट कर देखा। उसे सूंघ कर देखा, पर उसे पता न लगा कि डिबिया के अन्दर क्या है?

किसान ने सोचा कि उसकी पत्नी तथा उसके बीच कोई दुराव-छिपाव तो है नहीं, इसलिए वह ज़रूर बता देगी कि डिबिये के अन्दर क्या है। इसलिए घर पहुँचने तक अपनी जिज्ञासा को क्यों बनाये रखे? यह सोचकर किसान ने डिबिया के अन्दर की चीज़ को देखने का निश्चय किया।

उसने गाय को चरने के लिए छोड़ दिया, एक पेड़ के नीचे बैठ कर सावधानी से डिबिया खोला। तुरंत वह डिबिया को फेंक कर दूर जा पहुँचा। क्योंकि डिबिया में से एक भयंकर ज्वाला उठी, उसकी लपटों से पेड़ की डालें जल भी गयीं।

"बाप रे! मेरी पत्नी ने ही अगर यह डिबिया खोल दी होती तो उसके केश और मुँह भी जल गया होता। उस दिन रात को मेरी पत्नी ने भेड़िये को गालियाँ दी थीं, इसलिए उसके साथ बदला लेने के लिए भेड़ियेवाले ने यह उपाय किया होगा।" किसान ने अपने मन में सोचा।

अब सारा पेड़ जल रहा था। इसलिए किसान अपनी गाय को लेकर जल्दी-जल्दी घर चला गया। उस आग ने जंगल के सभी पेड़ों को जला डाला, मगर किसान और उसकी पत्नी भी गाय की वजह से बहुत दिन तक सुखी रहें।

मेहनत का फल

रामापुर नामक गाँव में कृष्णदास तथा महबूब नामक दो दोस्तों ने मिलकर एक बगीचा ख़रीदा।

कृष्णदास खेती का काम बिलकुल न जानता था। वह सदा भगवान का ध्यान करते उसी पर अपना सारा भार डाल चुका था।

महबूब खेती का काम अच्छा जानता था। वह दिन-भर खेती का काम करता था। घास निराना, पौधों तथा पेड़ों के आलव बनाना, पानी सींचना इत्यादि कामों में उसका सारा दिन बीत जाता था।

उस साल बगीचे में खूब फल-फूल लगे। सबको बेचने पर अच्छी रक़म मिली। अब उनके सामने यह समस्या पैदा हो गयी कि उस रक़म का बंटवारा कैसे करे!

उस रक़म को बराबर बांटने में दोनों राजी नहीं हुए।

"मैंने जी तोड़ मेहनत की, इसलिए बगीचे में ज्यादा फल लगे। अतः मुझे ज्यादा हिस्सा मिलना चाहिए।" महबूब ने कहा।

"मैंने निश्चल मन के साथ भगवान का ध्यान किया, इसलिए भगवान ने मुझ पर अनुग्रह करके ज़्यादा फल दिये, इसलिए मुझे ही ज्यादा हिस्सा मिलना चाहिए।" कृष्णदास ने कहा।

दोनों इस तरह थोड़ी देर तक वाद-विवाद करते रहे, आखिर मुखिये के पास जाकर अपने झगड़े का फ़ैसला करने की प्रार्थना की। मुखिये ने दोनों की दलीलें सुनकर कहा–"मैं तुम दोनों को एक छोटा काम दे देता हूँ। आज रात को वह काम पूरा करके कल सुबह मुझसे मिल लो। तब मैं बताऊँगा कि किसको कितना हिस्सा मिलना चाहिये।"

सदानंद

इसके उपरांत मुखिये ने प्रत्येक को दो-दो बोरे धान देकर कहा–"इसे कूट कर चावल लेते आओ।"

उन बोरों को लेकर कृष्णदास और महबूब अपने-अपने घर चले गये।

कृष्णदास ने धान कूटने का भार भगवान पर डाल कर उसने थोड़ी देर तक ईश्वर का ध्यान किया और सो गया।

महबूब रात-भर जागते हुए एक बोरे धान को कूट कर चावल बना पाया।

आधी रात के समय मुखिया दोनों के घरों के पास गया। उसने देखा कि कृष्णदास के घर धान कूटने की आवाज़ नहीं हो रही थी, पर महबूब के घर धान कूटने की आवाज़ हो रही थी।

दूसरे दिन सवेरे कृष्णदास तथा महबूब अपने अपने बोरों के साथ मुखिये के घर पहुँचे। मुखिये ने कृष्णदास के लाये हुए बोरों को खोल कर देखा तो उनमें एक भी चावल का दाना न था। कृष्णदास ने सोचा था कि भगवान की कृपा से सारे धान चावल बन गये होंगे, पर बोरों में सिर्फ़ धान देख वह अचरज में आ गया।

महबूब जो बोरे लाया था, उसमें एक बोरे में चावल और दूसरे में धान थे।

"कृष्णदास, देखते हो न? मेहनत किये बिना फल नहीं मिलता! तुमने भगवान पर विश्वास किया, मगर तुम पर भगवान ने अनुग्रह नहीं किया। यदि भगवान ने अनुग्रह किया होता, तो तुमसे काम करवा कर फल तुमको दिला देते। बगीचे के द्वारा जो आमदनी हुई वह सारी महबूब की मेहनत का ही फल है। तुमने भी यदि महबूब के साथ मेहनत की होती, तो तुम लोगों को और ज़्यादा आमदनी हुई होती। भविष्य में ही सही तुम दोनों मिलकर मेहनत करो और आमदनी को बराबर बांट लो।" मुखिये ने समझाया।

इसके बाद कृष्णदास भी महबूब के साथ मिलकर सभी काम करने लगा। आदमनी को बांटते वक़्त उन्हें किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ।

यक्ष पर्वत

[६]

[जटाधारी भूत को देखते ही लुटेरे भागने लगे। उनमें से कुछ लोगों ने ज्वार के भुट्टोंवाले बोरों को नदी में फेंक दिया। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को गुफ़ा के सामने पहुँचते ही जटाधारी भूत ने जो चेतावनी दी, उसे सुनकर मांत्रिक उन दोनों को भस्म करने की घोषणा करते गुफ़ा के भीतर भाग गया। इसके बाद...]

जीवदत्त यह सोचने लगा कि गुफा के भीतर जाकर मांत्रिक को बन्दी बनाया जाय अथवा उसके वापस लौटने तक प्रतीक्षा की जाय, तभी खड्गवर्मा ने गुफा की ओर शंका भरी दृष्टि से देखा और जीवदत्त से कहा–"जीवदत्त, लगता है, तुम्हारे वेष ने उस मांत्रिक को डरा दिया है। वह यह सोचकर गुफा के भीतर भाग गया होगा कि तुम मंत्र-तंत्र जानते हो! और अपने मंत्रों के प्रभाव से उसकी हानि करोगे, अब क्या किया जाय?"

जीवदत्त ने उसी वक़्त, देखा कि जटाधारी भूत गैण्डे की जाति के लोगों के हाथों में पड़ने से बचने के लिए चिल्लाते इधर-उधर भाग रहा है, उसे हँसी आयी, तब बोला–"मैंने इसीलिए सर पर चोटी रखी और हाथ में मंत्र-दण्ड धारण किया कि सब कोई यह समझ ले

कोई न था। कुछ लोग उसके भूत के हाथों में घायल हो पड़े हुए थे, कुछ लोग भूत के द्वारा मशाल से जलाने पर कपड़ों में आग लगने से ज़मीन पर लोट रहे थे और बाक़ी सब नदी तट की ओर भाग गये थे। मगर गेंडे की जाति के तीन युवक जटाधारी भूत को घेर कर हिम्मत के साथ भालों से प्रहार करने के प्रयत्न में थे, लेकिन वह भूत उनके प्रहारों से बचते "गुरुदेव" चिल्लाते गुफा की ओर भाग रहा था।

"दोस्त! क्या इसे तुम भूत मानते हो? या मांत्रिक किसी अपने एक अनुचर को यह विकृत वेष बनाकर कपट नाटक रच रहा है?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"मनुष्य का भी इस तरह भूत जैसा व्यवहार करना शुरू करने के बाद हमें उसे भूत ही मानना होगा। देखो, वह गैण्डे की जाति के युवकों से बचकर गुफा की ओर भाग रहा है।" ये शब्द कहते जीवदत्त भूत को पकड़ने के लिए गुफा की ओर दौड़ पड़ा। खड्गवर्मा भी उसका अनुकरण करने लगा।

दोनों जब गुफा के सामने पहुँचे तब जटाधारी भूत बन्दर की भांति वहाँ की चट्टानों पर से गुफा की ओर जल्दी-जल्दी चढ़ने लगा। उसका पीछा करनेवाले

कि मैं क्षत्रिय ही नहीं हूँ बल्कि मंत्र-तंत्र भी जानता हूँ। इसलिए मांत्रिक ने बड़ी आसानी से समझ लिया होगा कि मैं भी एक मांत्रिक हूँ। अब हमारी ख़ास समस्या यह कि हम क्या करें? हमें अपने रास्ते जाने के पहले इस मांत्रिक की ख़बर लेना जरूरी है, ठीक है न?"

"तब तो देरी ही क्यों करें? क्या गुफा में घुस जायें?" ये शब्द कहते खड्गवर्मा ने दो-चार क़दम आगे बढ़ाये।

जीवदत्त ने भी खड्गवर्मा के साथ आगे बढ़ते हुए चारों ओर एक बार नज़र दौड़ायी। उस वक़्त उस प्रदेश में जटाधारी भूत का सामना करनेवाला

गैण्ड़े की जाति के तीन युवक अपने अपने वाहनों पर खड़े हो भालों से उस पर प्रहार करने के यत्न में थे। तभी उन में से एक ने निशाना देख भूत की पीठ पर भाला फेंका। भाला तेजी से जाकर उसकी पीठ से टकराया और फिसलकर वेग से नीचे जा गिरा।

गैण्डे की जाति का एक युवक अपने वाहन से उतरकर जीवदत्त के पास आया और बोला–"सरकार, बड़ी भारी भूल हो गयी है। हमारे पास यदि कोई मज़बूत रस्सा होता तो उसे पकड़ लेते। लगता है कि हमारे भालों का प्रहार उस पर कुछ असर नहीं डाल पाया। उसके शरीर को जटाएँ लपेटी हुई हैं।"

"इस बार हम उस भूत को तुम्हारे कहे मुताबिक़ रस्सा फेंककर बन्दी बनायेंगे। तुम लोग यहीं रहो। हम गुफा में जाकर भूत तथा उसके मालिक मांत्रिक को भी पकड़ कर नीचे फेंक देंगे।" जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त तथा खड्गवर्मा चट्टानों पर चढ़कर गुफा के पास पहुँचे, तब तक जटाधारी भूत वहाँ जाकर कह रहा था– "गुरुदेव! एक सींगवाले महिषों पर चढ़कर आये हुए यमदूतों के साथ दो और आदमी मिल गये हैं। वे सब हमारी गुफा में आ रहे हैं, तुम जल्दी उन्हें भस्म कर डालो।"
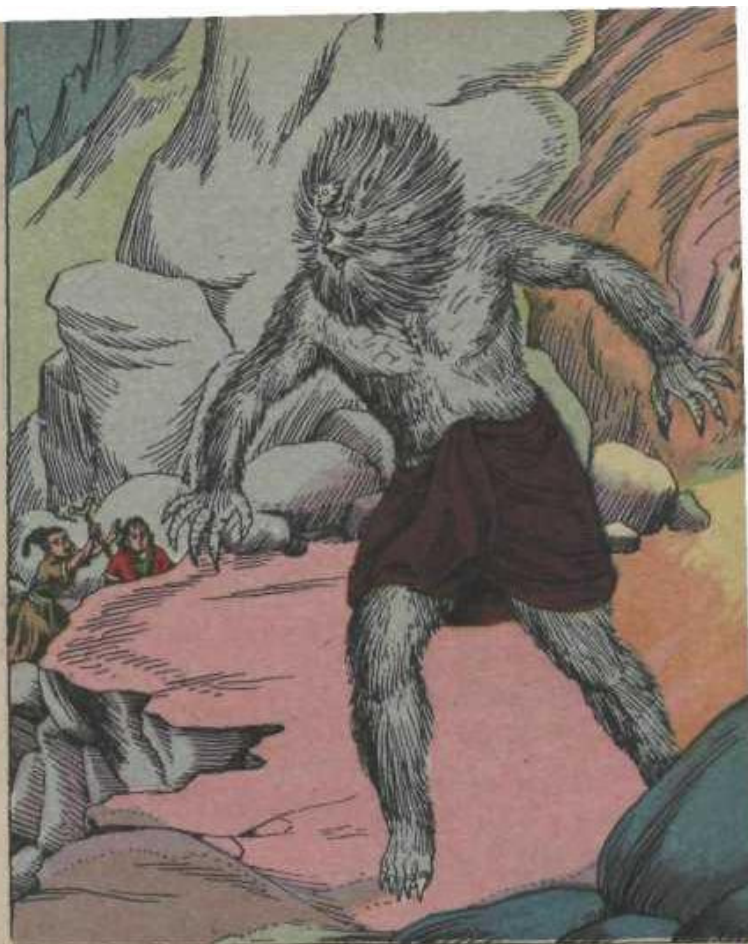
लेकिन गुफा के भीतर से कोई उत्तर नहीं आया। जटाधारी भूत ने भय के मारे कांपते हुए पीछे की ओर मुड़कर देखा। उसकी नज़र गुफा के समीप आनेवाले खड्गवर्मा तथा जीवदत्त पर पड़ी। तुरंत एक बार उछल कर जटाधारी भूत ज़ोर से चिल्ला उठा।

"अरे जटाधारी भूत! मत भागो। हम तुम्हारे गुरु के गुरु हैं। तुम अपने गुरु को भी बाहर बुला लाओ।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त हाथ में दण्ड को उठाये भूत की ओर तेज़ी से बढ़ा। उसी
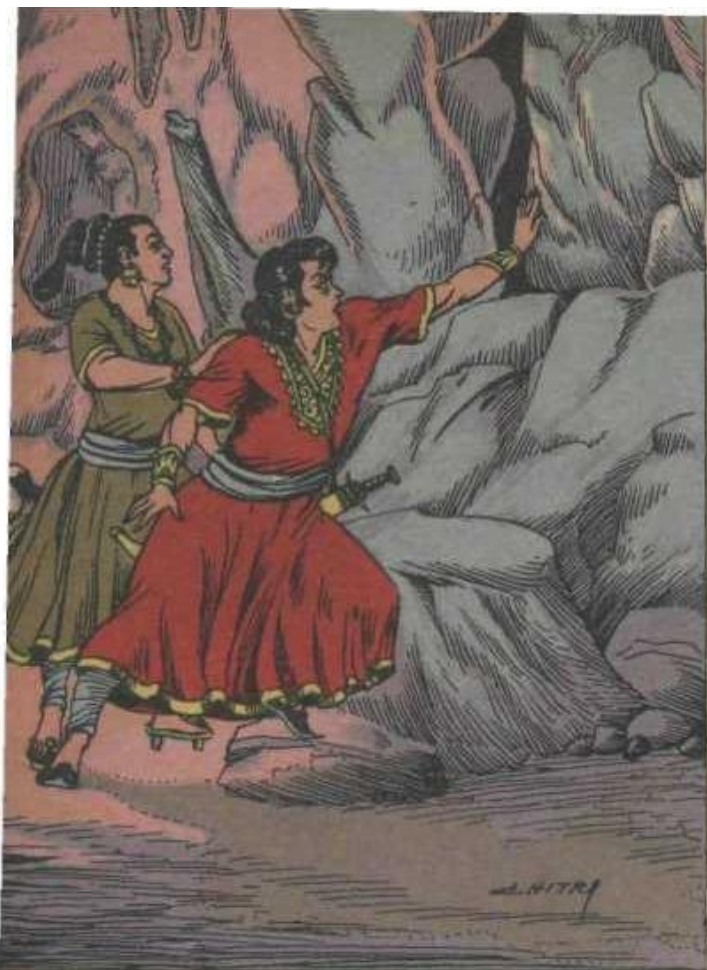
वक़्त गुफा के भीतर से कोई बातें सुनायी दीं। इसके साथ ही "जी हाँ, गुरुदेव" चिल्लाते जटाधारी भूत गुफा के अन्दर भाग गया।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त दूसरे ही क्षण गुफा के भीतर चले गये। मगर उन्हें जटाधारी भूत दिखाई नहीं दिया। गुफा के बीच चार-पांच फुट चौड़े एक गड्ढे में से धधकती ज्वालाएँ उठ रही थीं। उससे थोड़ी दूर पर तेल में भीगे मशाल पड़े हुए थे। उन लपटों की रोशनी में खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सारी गुफा में जटाधारी भूत तथा मांत्रिक की खोज़ की। दस-बारह फुट चौड़ी तथा बीस फुट लंबी उस गुफा में कोई दूसरा द्वार उन्हें कहीं दिखाई नहीं दिया। वे सोचने लगे-ये गुरु और शिष्य कहाँ छिप गये हैं?

"जीवदत्त! क्या ये दुष्ट अदृश्य हो जाने की शक्तियाँ भी रखते हैं?" खड्गवर्मा ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"नहीं, यदि ऐसी बड़ी शक्तियाँ उन्हें प्राप्त होतीं तो लुटेरों द्वारा लूटे गये ज्वार के भुट्टोंवाले बोरों को हड़पने के लिए वह मांत्रिक तथा उसका शिष्य जटाधारी भूत ऐसी परेशानी नहीं उठाते। इस गुफा से बाहर जाने का कोई गुप्त मार्ग अवश्य होगा। हम बड़ी सावधानी से एक एक पत्थर हिलाकर देख लेंगे।"-जीवदत्त ने कहा।

इसके बाद खड्गवर्मा तथा जीवदत्त गुफा की दीवार के हर एक पत्थर को सारी ताक़त लगा कर पीछे ढकेलने की कोशिश करने लगे।

आधा घड़ी तक इस प्रकार कोशिश करने के बाद एक चौकोना पत्थर हिल उठा। वह पत्थर फ़र्श से चार-पांच फुट ऊँचाई पर था।

पत्थर के जरा पीछे हटते ही जीवदत्त खड्गवर्मा को चेतावनी देते हुए बोला-"खड्गवर्मा, मांत्रिक और उसका अनुचर

जटाधारी भूत इसी रास्ते से भाग गये होंगे। फिर से इस पत्थर को उन लोगों ने ठीक से उसी जगह बिठाया है। मेरा संदेह है कि वे लोग हमारे वास्ते इस के पीछे की एक दूसरी गुफा में छिपे होंगे।"

"तो तुम्हारा विचार है कि वे लोग पीछे छिपे रहकर उस सुरंग में हमारे घुसते ही वे हम पर किसी भाले या छुरी से हमला करेंगे? यही न?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"हाँ, यही मेरा संदेह है।" जीवदत्त ने जवाब दिया।

"तब तो तुम एक काम करो। हम दोनों पत्थर को जोर से पीछे ढकेल देंगे। तुम एक ओर सरक जाओ, जलते मशाल को मैं उस सुरंग में फेंक देता हूँ, तब देखेंगे, यदि उन लोगों ने हम पर हमला नहीं किया तो हम उस रोशनी में देख सकते हैं कि दूसरी गुफा में क्या है? तब बड़ी सावधानी से हम उस गुफा में उतर सकते हैं।" खड्गवर्मा ने समझाया।

"खड्गवर्मा, तुम जो बताते हो, वह बड़ी बुद्धिमानी का उपाय तो नहीं कहा जा सकता, मगर इस हालत में हमारे सामने कोई दूसरा भी तो उपाय नहीं है। चलो, ऐसा ही करेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त के मुँह से ये शब्द निकलते ही खड्गवर्मा गुफा के बीच जलनेवाले अग्निकुंड के पास गया और वहाँ पर पड़े दो मशालों को लेकर जलाया। दूसरे ही क्षण दोनों मशाल धक् धक् करते जलने लगे। खड्गवर्मा उन्हें उठा लाया। तब दोनों ने मिलकर चौकोने पत्थर को ढकेल दिया। वह पत्थर पीछे की ओर तो नहीं गिरा, बल्कि खिड़की के किवाड़ की भांति बाजू में सरक कर खड़ा रह गया। जीवदत्त सुरंग के एक ओर दुबक कर बैठ गया। खड्गवर्मा ने झट जलनेवाले दो मशालों को सुरंग में से भीतर फेंक दिया।

पल भर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अपनी सांस रोके बड़े कुतूहल के साथ एक ओर सरक कर देखते रहे कि अब क्या होनेवाला है। दूसरे मिनट में खड्गवर्मा ठठा कर हँस पड़ा और बोला—"दोस्त, वे दुष्ट यहाँ से बड़ी दूर भाग गये हैं। हमें बेवकूफ़ बना कर चले गये हैं। मुझे लगता है कि उनके भाग जाने के लिए उस ओर कोई और गुफा है।"

"हो सकता है, साथ ही यह भी संभव है कि वे उस ओर हाथों में हथियार लिये हमारी प्रतीक्षा में खड़े हो कि हम कब उतर आयेंगे। ख़बरदार!" जीवदत्त ने सावधान किया।

"और कब तक हम सावधान रह सकते हैं? सूर्योदय होने को है!" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा ने म्यान से तलवार निकाली और सुरंग में से झांक कर देखा। उसी समय जीवदत्त ने एक भाला उठाया और उसे सारी ताक़त लगा कर सुरंग में से भीतर फेंक दिया।

खड्गवर्मा ने सुरंग में से जो मशाल फेंके, उनकी रोशनी में एक छोटा सा सुरंग मात्र दिखाई पड़ा। पर कहीं मनुष्यों का पता न लगा। जीवदत्त ने भी सुरंग में बड़ी सावधानी से देखा और कहा—"खड्गवर्मा, अब हम इस सुरंग मार्ग से दूसरे सुरंग में उतर जायेंगे। वे दुष्ट उस ओर कहीं छिपे रहे होंगे। उन लोगों ने नाहक़ हमें काफी परेशान किया है। उनका हमें ज़रूर खात्मा करना होगा।" ये शब्द कहते जीवदत्त झट सुरंग में उतर पड़ा। खड्गवर्मा भी उसके पीछे सुरंग से होकर उतर गया।

उस प्रदेश में उन्हें पत्थर-कंकड़ को छोड़ कुछ दिखाई नहीं दिया। खड्गवर्मा हाथ में तलवार लिये सुरंग मार्ग से चल पड़ा। जीवदत्त मंत्रदण्ड से दीवारों पर आवाज़ करते खड्गवर्मा का अनुसरण करने लगा।

वे दोनों सुरंग मार्ग से दो-तीन मिनट तक चल कर उसके मुख प्रदेश पर पहुँचे। सामने उन्हें एक विशाल मैदान दिखाई दिया। वहाँ पर उन्हें शिथिलावस्था में स्थित छोटे-बड़े भवन, तथा थोड़ी दूर और आगे शिथिलावस्था में स्थित ऊँचा बुर्ज भी दिखाई दिया।

जीवदत्त ने उन शिथिल भवनों को देखते ही अपार आनंद में आकर कहा– "खड्गवर्मा, सूर्योदय का समय निकट आया है। हम गुफा के सुरंग मार्ग से होकर शिथिल नगर में पहुँच गये हैं।"

"क्या यह शिथिल नगर है? यहाँ पर है ही क्या? थोड़े से शिथिल भवन ही तो हमें दिखाई दे रहे हैं!" खड्गवर्मा ने पूछा।

"हो सकता है कि एक जमाने में ये ही शिथिल खण्डहर नगर के मुख्य भवन रहे हों! मांत्रिक और जटाधारी भूत इन्हीं खण्डहरों में चूहों की भांति छिपे बैठे हों! उन्हें हम बाहर कैसे बुला सकते हैं?" जीवदत्त ने पूछा।

जीवदत्त के सोचने के मुताबिक़ मांत्रिक तथा जटाधारी भूत शिथिल भवनों के खण्डहरों में कहीं छिपे न थे। वे दोनों उन महलों के एक विशाल मंडप में ऊँचे आसन पर बैठी एक पुजारिणी के सम्मुख घुटने टेक कर बैठे हुए थे। उनके अगल-

बगल में भयंकर आकृतिवाले आयुध धारण कर खड़े हुए थे।

पूजारिणी ने आँखें लाल करके दांत भींचते कहा–"अरे मांत्रिक तथा जटाधारी भूत! उठ खड़े हो जाओ। तुम दोनों की मूर्खता के कारण इस पवित्र नगर का रहस्य मानवों पर प्रकट हो गया है।"

"महाशक्ती! आपकी आज्ञा हो तो अभी उन दोनों मानवों को पकड़ लाकर जटाधारी भूत का आहार बना डालूंगा।" मांत्रिक ने कांपते हुए उत्तर दिया।

पूजारिणी ने विकट अट्टहास के साथ अपने हाथ के शूल को झाड़ते हुए कहा– "तुम्हारा जटाधारी भूत इतना मूर्ख बन

गया है कि आहार को उसके मुंह के पास ला रखने पर भी वह खा नहीं पा रहा है। महा भूत की मेहर्बानी से वे दोनों मानव हमारे किसी प्रकार के प्रयत्न के बिना इस प्रदेश में आ पहुँचे। वे कौन हैं? कहाँ से आये हैं? ये सब विवरण जाने बिना महा भूत को उनकी बलि देना खतरे से खाली नहीं है, समझें!"

"हाँ, हाँ, महाशक्ती! हमें मालूम हो गया।" वहाँ के सभी सेवकों ने मुक्त कंठ से कहा।

पुजारिणी ने एक बार सबकी ओर तीखी दृष्टि से देखा और कहा–"अरे मूर्खो, मेरी बातें ध्यान से सुनो। उन दोनों मानवों को इस तरह मेरे पास पकड़ लाओ जिससे उन्हें कोई तक़लीफ़ या हानि न हो! सूर्योदय हो गया है। वे इन शिथिल भवनों को ढूंढते-खोजते चल पड़ेंगे! तुम में से कुछ लोग गुप्त रूप से उनका अनुसरण करके सुन लो कि वे क्या क्या बातें करते हैं! ठीक दुपहर के समय उन्हें मेरे पास ले आओ। वही शुभ मुहूर्त है। इस बीच उन्हें स्वेच्छा के साथ घूमने दो।"

"जो आज्ञा, महाशक्ती!" ये शब्द कहते पुजारिणी के चार सेवक, मांत्रिक तथा जटाधारी भूत पुजारिणी को प्रणाम कर मण्डप में से बाहर आये।

"गुरुदेव! पीछे से जाकर मैं उन मानवों पर टूट पड़ूँगा और उन्हें खा जाऊँगा। उनकी वजह से महाशक्ती पुजारिणी के द्वारा मुझे डांटें सुननी पड़ीं।" जटाधारी भूत ने कहा।

"अरे, तुझसे भी ज़्यादा मेरा अपमान हुआ!" ये शब्द कहते मांत्रिक एक छुरी को मुठ्ठी में कस कर पकड़ते बोला–"लो देखो, वे दोनों सुरंग के द्वार के सामने बैठे हैं। हम उन दोनों का वध करके जंगल में भाग जायेंगे! चलो।"

इसके बाद वे चीते की तरह झुक कर चलते खड्ववर्मा तथा जीवदत्त की ओर चल पड़े।

(और है)
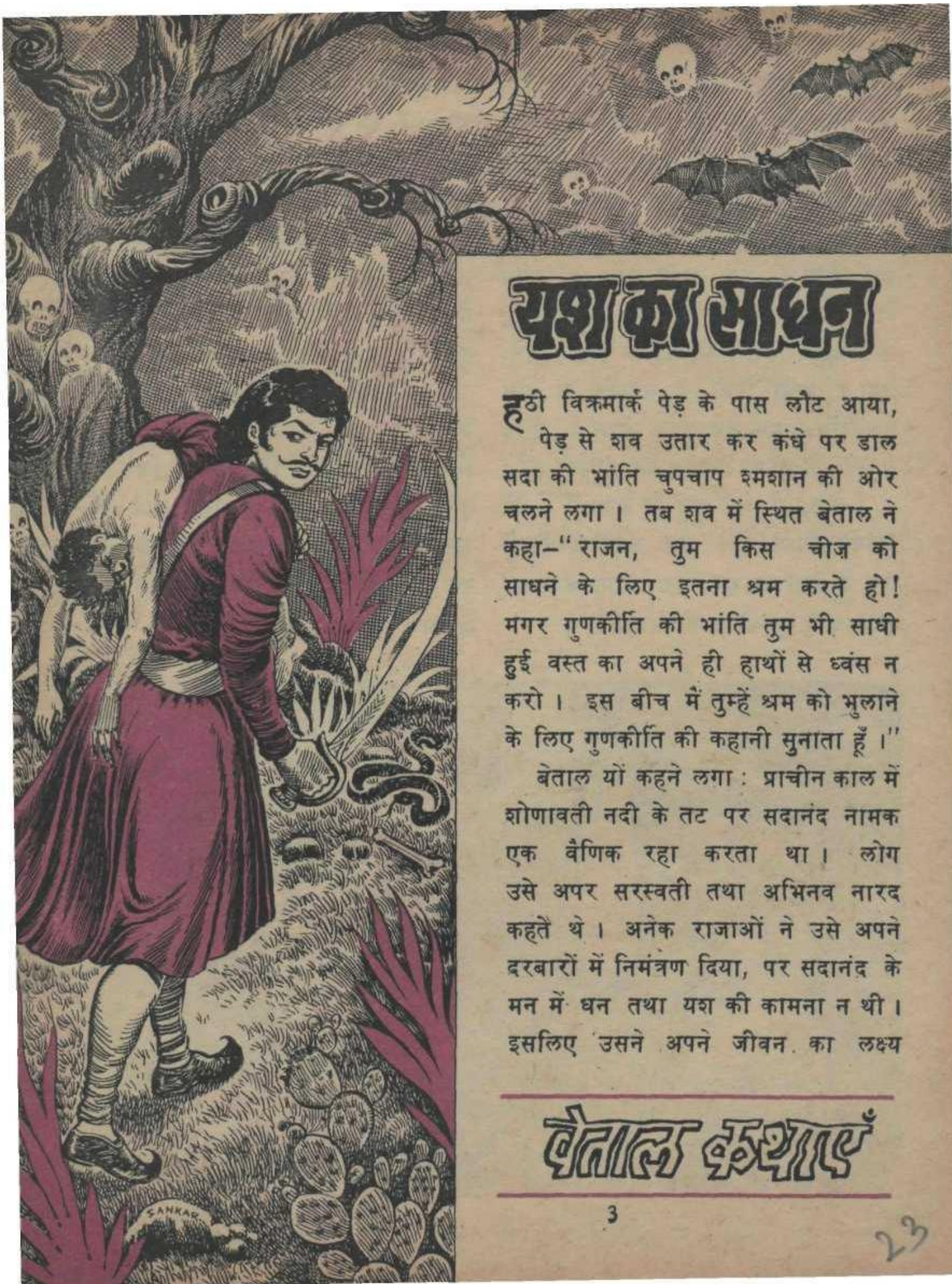
यश का साधन

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम किस चीज़ को साधने के लिए इतना श्रम करते हो! मगर गुणकीर्ति की भांति तुम भी साधी हुई वस्त का अपने ही हाथों से ध्वंस न करो। इस बीच में तुम्हें श्रम को भुलाने के लिए गुणकीर्ति की कहानी सुनाता हूँ।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में शोणावती नदी के तट पर सदानंद नामक एक वैणिक रहा करता था। लोग उसे अपर सरस्वती तथा अभिनव नारद कहते थे। अनेक राजाओं ने उसे अपने दरबारों में निमंत्रण दिया, पर सदानंद के मन में धन तथा यश की कामना न थी। इसलिए उसने अपने जीवन का लक्ष्य

बेताल कथाएँ

अधिक से अधिक शिष्यों को अपनी विद्या का दान देना बनाया। इसलिए हज़ारों शिष्यों ने उसके यहाँ विद्या प्राप्त करके राजाश्रय तथा यश भी प्राप्त किया।

धीरे धीरे सदानंद वृद्धावस्था को प्राप्त होने लगा। अब उसके पास जो लोग विद्या प्राप्त करने के लिए आने लगे, उन्हें अपने पुराने शिष्यों के पास भेजता गया। उन्हीं दिनों में सदानंद के पास गुणकीर्ति नामक एक युवक आया। उसने सदानंद से वीणा सिखाने की प्रार्थना की।

"बेटा, मैं अब वृद्ध हो चुका हूँ। मेरे अनेकों शिष्य हैं। तुम उनमें से किसी एक के यहाँ जाकर विद्या प्राप्त करो।" सदानंद ने गुणकीर्ति को समझाया।

"महानुभाव, आपके शिष्यों में से एक ने भी पूर्ण रूप से यह विद्या प्राप्त नहीं की है। मैं पूर्ण विद्या प्राप्त करने की लगन को लेकर आपके पास आया हूँ। यदि आप मेरा मार्गदर्शन करेंगे तो मैं वीणा का अभ्यास करूँगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मैं आपके यश को बनाये रखूँगा।" गुणकीर्ति ने विनयपूर्वक प्रार्थना की।

"बेटा, तुम्हारा उत्साह प्रशंसनीय है, पर मेरा संदेह है कि तुमको पूर्ण विद्या सिखलाने तक मैं जीवित रहूँगा, फिर भी तुम बहुत दूर से मेरे पास आये हो, इसलिए मैं तुम्हें अवश्य वीणा सिखाऊँगा।" इन शब्दों के साथ सदानंद ने गुणकीर्ति को अपना शिष्य बनाया।
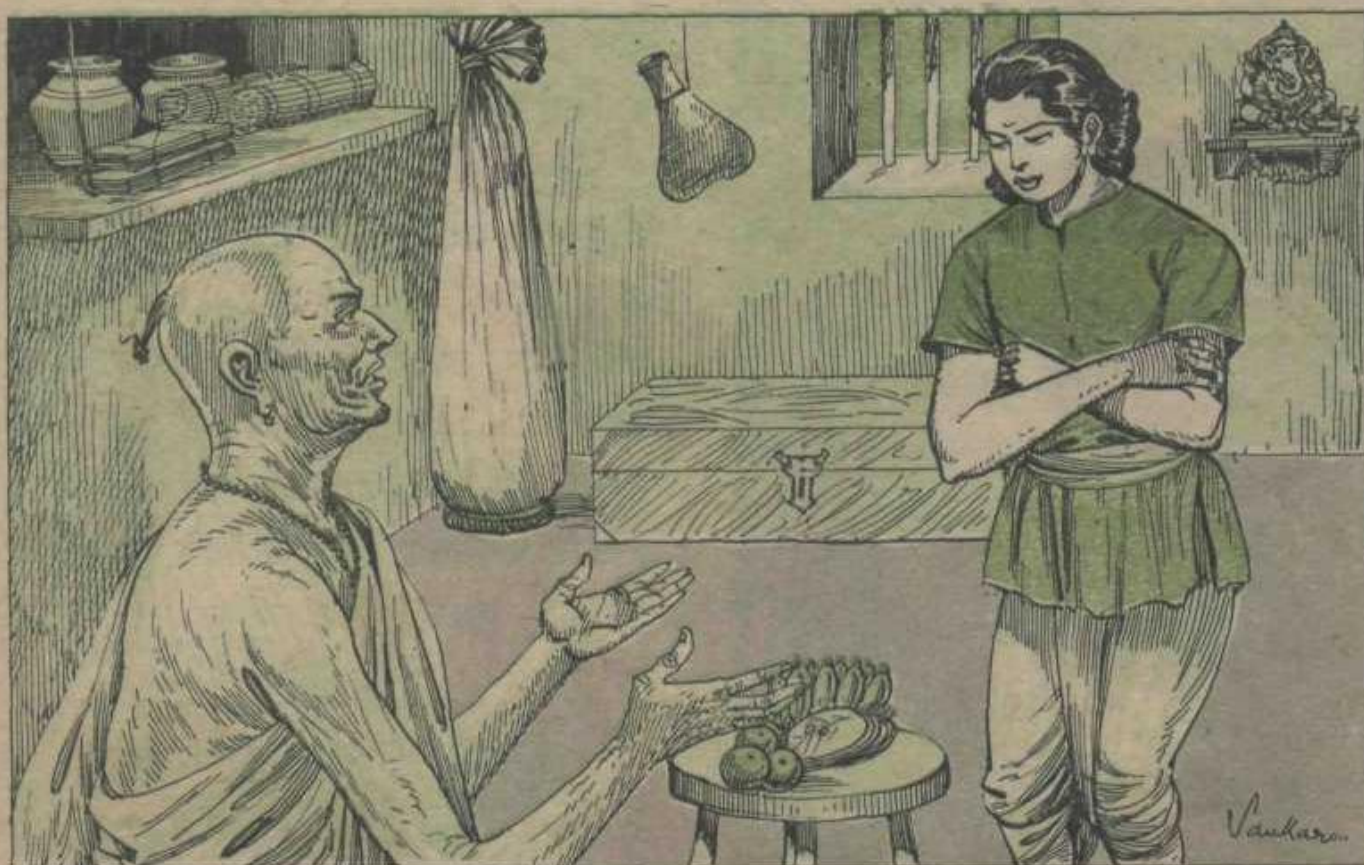
गुणकीर्ति अपने गुरु की सेवाशुश्रूषा करते बड़ी निपुणता के साथ वीणा-वादन सीखने लगा।

फिर भी सदानंद ने जो सोचा था, वही हुआ। गुणकीर्ति का विद्याभ्यास आधा भी पूरा न होने के पहले सदानंद बीमार पड़ गया। एक दिन उसने गुणकीर्ति को अपने निकट बुला कर समझाया–"बेटा, मेरा अंतिम समय निकट आ गया है। तुम्हारी विद्या की पूर्ति करने की शक्ति मुझ में नहीं रही। यदि तुम चार-पांच वर्ष पूर्व मेरे पास आये होते तो तुमको मैंने अपने से भी बड़ा वैणिक बना दिया होता, मगर यह भाग्य हम दोनों को भी प्राप्त न था। हमारे वंश में चिरकाल से एक विचित्र वीणा रही है। उस पर प्रत्येक स्वर तीनों स्थानों में ध्वनित होता है। उस पर चाहे जो भी वैणिक वादन करे, तो भी श्रोताओं को अद्भुत स्वर उसमें से सुनायी देते हैं। मैं वह वीणा तुम्हें दूँगा। उसकी सहायता से तुम राजाओं को प्रसन्न कर सकते हो। अलावा इसके तुम श्रोताओं में यह भ्रम भी पैदा कर सकते हो कि तुम यशस्वी वैणिक हो।" इस प्रकार समझा कर सदानंद ने वह वीणा गुणकीर्ति को दी और सदा के लिए आँखें बंद कर लीं।

गुणकीर्ति ने भक्तिपूर्वक अपने गुरु की अंत्येष्ठि क्रियाएँ कीं और वह स्वयं उस वीणा को लेकर राजा के दरबार में
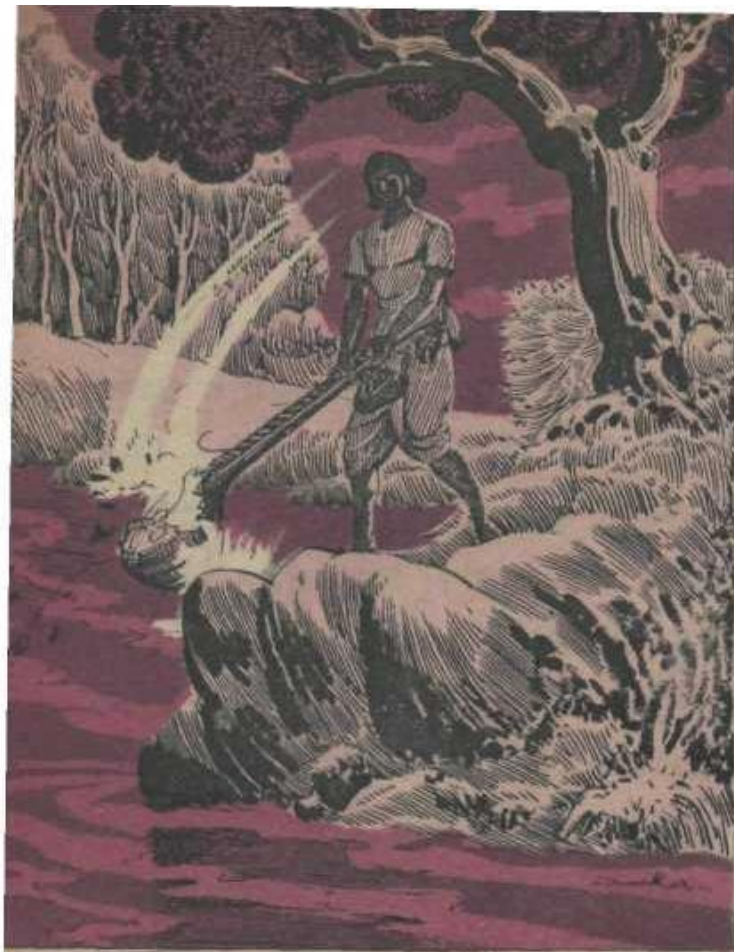
गया और राजा से निवेदन किया– "महाराज, आप मुझे अपने दरबारी वैणिक बना लीजिये ।"

राजा ने दरबार में गुणकीर्ति को वीणा-वादन करने की अनुमति दी। गुणकीर्ति ने अपने पूर्व परिचित संगीत को उस विचित्र वीणा पर सुनाया। इस पर सभी दरबारी मंत्र मुग्ध से हो गये। उन लोगों ने ऐसा वीणा-वादन कभी नहीं सुना था। राजा ने उसे अपने दरबारी वैणिक नियुक्त किया और उसका भारी सम्मान किया। इस से उसका यश चारों ओर फैल गया। अनेक प्रसिद्ध वैणिकों ने गुणकीर्ति का वीणा-वादन सुना और बताया कि गंधर्व जाति का अंश न रखनेवालों को छोड़ ऐसी निपुणता दुसरों के लिए संभव नहीं है।

अनेक देशों से युवक आये और गुणकीर्ति के शिष्य बनने की इच्छा प्रकट की। गुणकीर्ति को उन्हें मना करने के लिए तरह-तरह के बहाने करने पड़े।

दुनिया की दृष्टि में गुणकीर्ति बड़ा ही प्रतिभाशाली, यशस्वी और धनी भी है, पर वह एकांत में रहते समय मानसिक दृष्टि से बड़ी अशांति का अनुभव करता था।

उन्हीं दिनों में एक बार राजा ने गुणकीर्ति को बुलाकर कहा–"तुम्हें मेरी पुत्री कलावती को वीणा-वादन सिखाना होगा। उसने तुम्हें अपने भावी पति के रूप में वरण भी किया है।"

वह बात सुनने पर गुणकीर्ति की अशांति दुगुनी हो गयी। वह मानसिक बीमारी से परेशान सा मालूम होने लगा।

आख़िर एक दिन रात को अपनी विचित्र वीणा लेकर सब की आँख बचाकर नदी तट पर गया और उसे पत्थरों पर मार कर ध्वस्त दिया। इसके उपरांत वह सीधे अपने गुरु के आश्रम में चला गया। वहाँ पर थोड़े दिन रह कर अपनी पूर्व वीणा पर निरंतर साधना करने लगा। गुरु के अभाव में भी उसकी यह साधना सफल हो गयी।

कुछ ही दिनों में गुणकीर्ति ने जान लिया कि उसकी साधना पूर्ण हो गयी है। तब वह राज दरबार में लौट आया और अपनी साधारण वीणा पर वादन करते उस प्रतिभा का श्रोताओं को परिचय दिया जिसे उसने विचित्र वीणा पर सुनाया था।

अब उसने न केवल कलावती को वीणा-वादन सिखाया, अपितु अपने पास शिष्य बनने आये हुए सभी लोगों को आश्रय देकर गुरुकुल का संचालन भी करने लगा। कालक्रम में राजा ने अपनी पुत्री के साथ उसका विवाह भी किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, गुणकीर्ति कैसा बावरा है। क्या विचित्र वीणा का ध्वंस करना उसका पागलपन नहीं है? यदि उसे पूर्ण पांडित्य प्राप्त न होता तो वह कितना नुक़सान उठाता? गुणकीर्ति ने ऐसा क्यों किया है? तुम जानते हुए भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों कहा—"गुणकीर्ति बावरा नहीं है। वह अपना एक निश्चित लक्ष्य रखता है। उसका लक्ष्य सदानंद जैसे विद्वान बनने का है। सदानंद के बीच में ही मर जाने से उसके लक्ष्य की पूर्ति नहीं हुई। उसने अपने गुरु से पांडित्य चाहा तो उसे विचित्र वीणा प्राप्त हुई। प्रतिभाशाली साधन को अधिक महत्व नहीं देता, प्रतिभा को ही महत्व देता है। पर साधन को महत्व प्राप्त होने से वह गुणकीर्ति की अशांति का कारण बना। अपने लक्ष्य की पूर्ति में बाधा बनी हुई विचित्र वीणा को ध्वंस करना उसके लिए अनिवार्य सा हो गया। उसमें आत्मविश्वास की कमी न थी। इसलिए उसने एकलव्य जैसे अपने गुरु को ध्यान में रखकर अपने पांडित्य की पूर्ति कर ली। यदि उसकी पूर्ति भी न होती तो भी संभवत वह दुखी न होता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

तीन छींके

मूढ़मति एक लकड़हारे का लड़का था। उसके पिता के मरने के बाद लकड़ी काटने का काम उसके सर पर आ पड़ा। वह अपने गधे को हाँक कर जंगल में चला गया और एक पेड़ पर चढ़ कर उसी डाल को काटने लगा जिस पर वह बैठा था।

रास्ता चलनेवाले एक मुसाफ़िर ने समझाया–"तुम उस डाल को मत काटो, नीचे गिर जाओगे!" मूढ़मति ने उसकी बात की परवाह न की और उसी डाल को काट कर नीचे गिर गया। मूडमति ने सोचा कि वह कोई ज्योतिषी है, इसलिए होनेवाली घटना का हाल बताया है, यह सोच कर वह दौड़ कर उसके पास गया और पूछा–"ज्योतिषी जी, यह बताओ कि मैं कब मर जाऊँगा?"

उसने समझ लिया कि यह कोई मूर्ख है, इसलिए वह यह कहते अपने रास्ते चला गया–"जब तुम्हारा गधा तीन बार छींकेगा, तब तुम मर जाओगे।"

मूढ़मति गधे को लेकर घर लौट रहा था, एक जगह कूड़ा जल रहा था। उस धुए के नाक में जाने के कारण गधा छींक उठा। मूढ़मति डर गया और अपनी पगड़ी निकाल कर गधे की नाकों पर बांध दिया। सांस के न चलने की वजह से वह फिर छींक पड़ा, मूढ़मति और डर गया, इस बार उसने गधे की नाकों में कंकड़ भर दिये, इस कारण गधा और जोर से छींक उठा। मूढ़मति डर के मारे बेहोश हो गया। रास्ता चलनेवालों ने उसके मुंह पर पानी छिड़क दिया। होश में आने पर उसने आँखें खोल कर पूछा–"क्या यह स्वर्ग है या नरक?" उसकी कहानी सुन कर सब लोग हंस पड़े।

चालबाजी

एक गाँव में शंभुदास नामक एक आदमी था। वह झूठी गवाहें देकर अपना गुजारा करता था। झूठी गवाहें देकर पैसे कमाने का जब मौक़ा नहीं मिलता तब वह गाँववालों के बीच कोई झगड़ा-फसाद पैदा करता, और जो ज़्यादा पैसे देता, उसकी ओर से गवाह देता।

कुछ समय बाद शंभुदास की चालबाजी का सब को पता लग गया, इसलिए गाँव के बुजुर्गों ने उसकी गवाही लेना बंद कर दिया। इसलिए शंभुदास ने दूर के गाँवों में जाकर अपना पेशा चलाना चाहा और गाँव से चल पड़ा।

रास्ते में उसे एक बनिया अपने सर पर घी का कनस्तर रखे जाते दिखाई दिया। शंभुदास के पीछे कोई मजदूर चला आ रहा था। उन दोनों को देखते ही शंभुदास के मन में कोई विचार आया।

शभुदास ठहर गया, मजदूर के निकट आने पर उसने कहा–"सुनो, मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ, करोगे?"

"नफ़ा हो तो ज़रूर करूँगा।" मजदूर ने जवाब दिया।

"सर पर घी का कनस्तर रखे जानेवाले बनिये को देखा? तुम यह कहकर वह कनस्तर छीन लो कि वह तुम्हारा ही है। बनिया अगर तुम पर फ़रियाद करे तो मैं तुम्हारी ओर से गवाही दूँगा। इस झूठी गवाही के लिए तुम मुझे दो रुपये दो। मुझे दो रुपयों का नफ़ा होगा और तुम्हें एक घी का कनस्तर! समझें!" शंभुदास ने मजदूर से कहा।

यह उपाय मजदूर को अच्छा लगा। वह जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा, बनिये के सर से घी का कनस्तर खींचकर बोला–"यह कनस्तर तो मेरा है।"

गंगा प्रसाद

"यह तो अन्याय है! मैं अगले गाँव में जाकर तुम पर फ़रियाद करूँगा।" बनिये ने मजदूर से कहा।

"चलो, मैं भी चलता हूँ। कचहरी में मैं यह साबित कर सकता हूँ कि यह कनस्तर मेरा है।" मजदूर ने कहा।

दोनों मिलकर अगले गाँव के न्यायाधिकारी के पास पहुँचे। उनके पीछे शंभुदास भी चल पड़ा।

दोनों की बातें सुनकर न्यायाधिकारी ने कहा–"तुम दोनों में कौन सच बोलता है, मेरी समझ में नहीं आता है।"

इस पर मजदूर ने कहा–"मालिक, मैं बाल-बच्चोंवाला हूँ, क्या मैं कभी झूठ बोल सकता हूँ? आगे के गाँव रहनेवाली अपनी बेटी के घर में यह घी का कनस्तर ले जा रहा था, बनिये ने देखा और इसे खींचने लगा। इसलिए मैं इसको आपके पास खींच लाया हूँ।"

"तुम जो कहते हो, इसे सच साबित करने के लिए क्या तुम्हारा कोई गवाह है?" न्यायाधिकारी ने मजदूर से पूछा।

"जी हाँ, कोई एक मुसाफ़िर उस राह से जा रहा था, एक मिनट ठहर जाइये।" यह कहकर मजदूर गली में आया और शंभुदास को भीतर ले गया।

न्यायाधिकारी ने शंभुदास से पूछा– "क्या तुम इन दोनों को जानते हो?"

"हुज़ूर! रास्ते में इन दोनों को झगड़ते हुए मैंने देखा।" शंभुदास ने जवाब दिया।
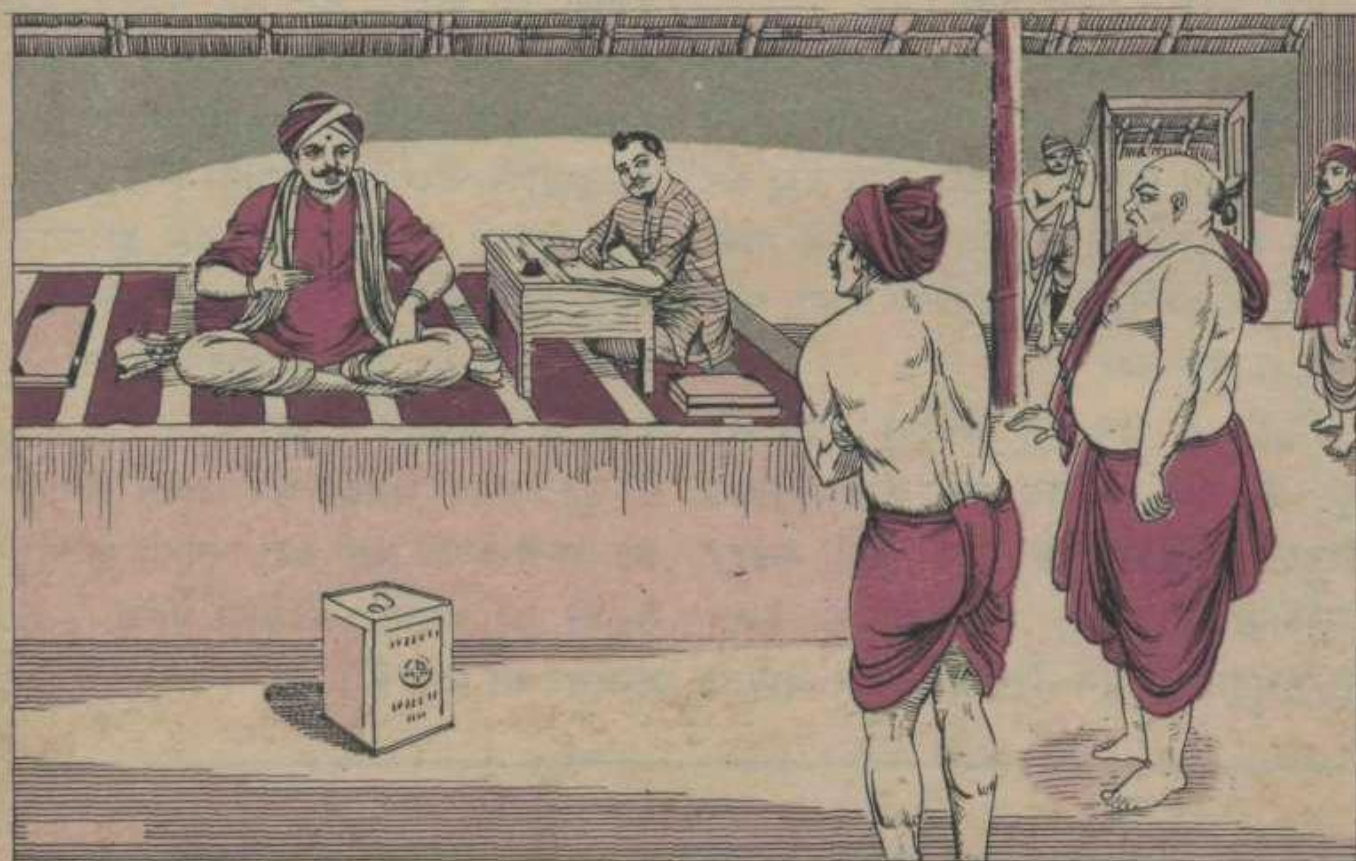
"तब तो बताओ, यह कनस्तर किसका है? किससे किसने इसे छीन लिया?" न्यायाधिकारी ने शंभुदास से पूछा।

"यह मजदूर घी का कनस्तर सर पर रखे जा रहा था। इस बनिये ने कनस्तर को खींच लिया! मैंने अपनी आँखों से देखा है, हुज़ूर!" शंभुदास ने कहा।

शंभुदास की गवाही के आधार पर न्यायाधिकारी ने घी का कनस्तर मजदूर को दिलवाया। मजदूर ने घी का कनस्तर ले लिया और शंभुदास के हाथ दो रुपये दिये। इसके बाद फिर तीनों चल पड़े। आगे-आगे मजदूर चल रहा था, उसके पीछे शंभुदास और बनिये चल रहे थे।

शंभुदास की चालबाजी बनिये को मालूम हो गयी। बनिये ने निश्चय कर लिया कि शंभुदास को धोखा देकर अपने घी के कनस्तर को फिर से पा लेना है।

बनिये ने शंभुदास के साथ चलते हुए कहा–"देखो भाई, मैंने सोचा था कि तुम मुझसे ज़्यादा अक़्लमंद हो! लेकिन अब मुझे मालूम हो गया कि तुम से यह मजदूर ही ज़्यादा अक़्लमंद है। उसने तुम्हारे हाथ दो रुपये रखे और बीस रुपये की क़ीमत का घी का कनस्तर हड़प लिया।"

ये बातें सुनकर शंभुदास का चेहरा पीला पड़ गया। बनिये ने फिर यों कहा–"तुम ने जो काम किया, वही काम करके मैंने घी का यह कनस्तर पा लिया। घी
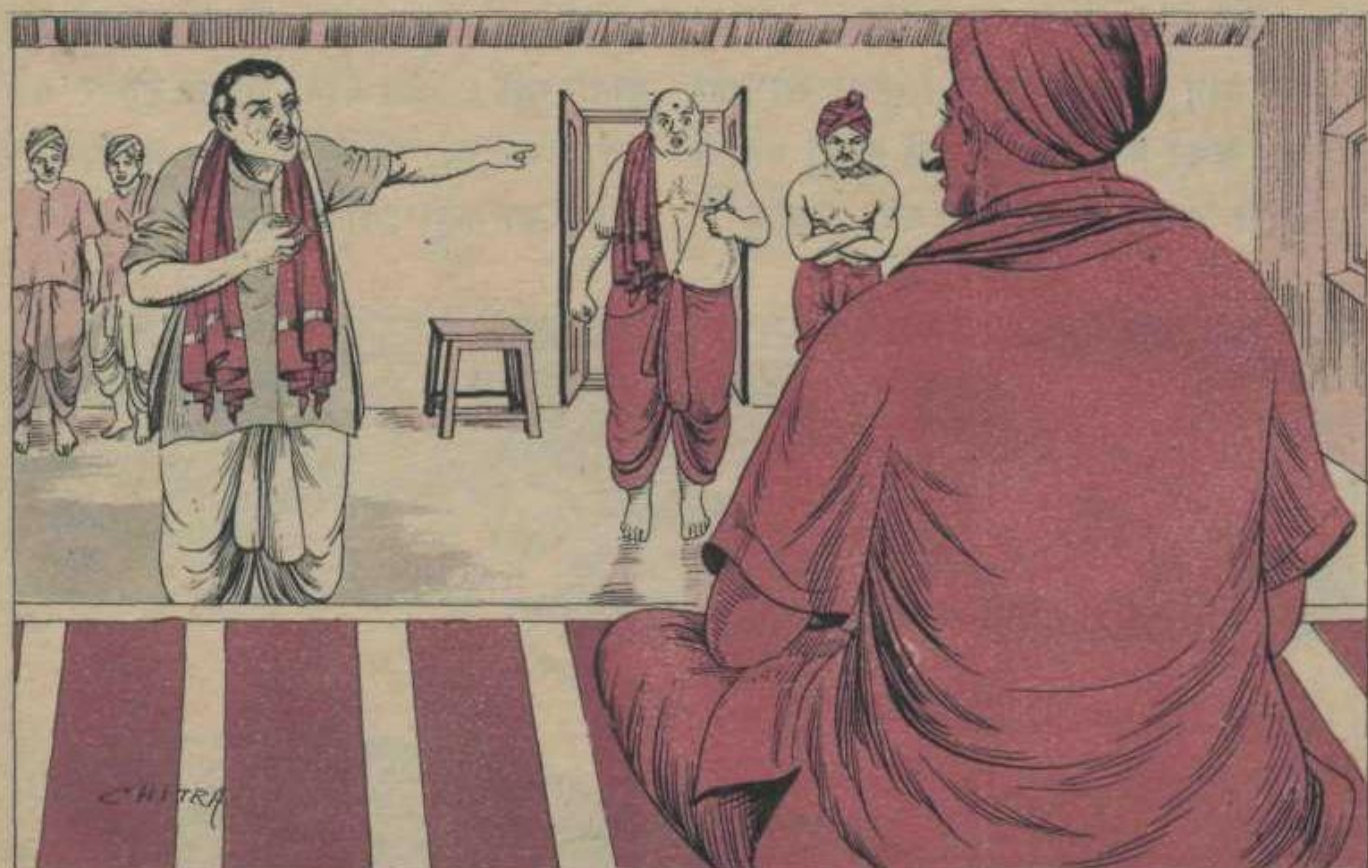
की दूकान में एक ने इस कनस्तर का मोल भाव किया। ग्राहक दूकानदार को पैसे देने लगा, तो मैंने इशारा करके रुपये देने से मना किया। यह बात समझकर ग्राहक ने दूकानदार से कहा कि मैंने रुपये तो पहले ही दे दिये हैं। दूकानदार ने कहा कि उसे रुपये नहीं मिले हैं। दोनों में विवाद बढ़ता गया। लोगों की भीड़ लग गयी। तब मैंने दखल देकर दूकानदार से कहा–"अजी, यह तुम कैसे दगा देते हो? इस आदमी के रुपये देते मैंने देखा है।" सब लोगों ने दूकानदार को डाँटा और ग्राहक को घी का कनस्तर दिलाया। ग्राहक कनस्तर लिये अपने गाँव जा रहा था। मैं उसके पीछे पड़ गया। ग्राहक ने मेरे हाथ दो रुपये देने चाहे, मगर मैं कोई पागल तो न था, इसलिए मैंने दो रुपये लेने से इनकार किया और ग्राहक के हाथ दो रुपये देकर मैंने ही यह कनस्तर लिया। तुमने भी वही किया, मगर कनस्तर पा नहीं सके! यह तो तुम्हारी बेवकूफ़ी थी! मैं क्या बताऊँ?"

बनिये के मुँह से यह बात निकलते ही शंभुदास का लोभ जाग उठा। उसने पूछा–"तब तो मैं अब क्या करूँ?"

"मजदूर ने मेरे साथ जो किया, तुम भी वही करो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मेरी मदद के लिए कुछ न कुछ मुझे दे दो।" बनिये ने शंभुदास को समझाया।

शंभुदास जल्दी जल्दी चलकर मजदूर के रास्ते को रोककर खड़ा हो गया और बोला–"तुमने मेरा कनस्तर बड़ी दूर तक ढोया, अब उसे मुझे दे दो।"

"तुम्हारी गवाही के लिए मैंने पैसे दे दिये, मुझे धोखा देने की कोशिश न करो। बड़ा बुरा होगा, समझें!" मजदूर ने डाँटा।

शंभुदास ज़बर्दस्ती कनस्तर छीनने को हुआ। मजदूर ने कनस्तर उतारा और शंभुदास पर टूट पड़ा। दोनों में मार-पीट होती रही। जब दोनों घायल होकर थक गये, तब देखा, घी का कनस्तर गायब था। बनिये का कहीं पता न चला।

महाकवि और आम

महाकवि गालिब को आम बहुत ही पसंद थे। उनकी बातचीत बड़ी चमत्कार पूर्ण होती थी।

एक दिन शाम को गालिब सुलतान के साथ आम के बगीचे में गये। आम के पेड़ फलों से लदे थे।

गालिब के हर पेड़ को ध्यान से देखते देख सुलतान ने पूछा–"आप उन पेड़ों की ओर ऐसे क्यों देखते हैं?"

"मैं इसलिए देखता हूँ कि कहीं मेरे बाप-दादाओं के नाम इन पेड़ों पर दिखाई दें!" गालिब ने जवाब दिया।

गालिब की बातों में यह चमत्कार छिपा था कि वे पेड़ उनके बाप-दादाओं के हों तो उनके फल अपने हो जायेंगे। यह बात जान कर सुलतान ने आम तुड़वाये और टोकरियों में भरवा कर गालिब के घर भिजवा दिये।

एक दिन गालिब अपने घर के आंगन में बैठे आम खाते हुए गुठली फेंक रहे थे। उस वक्त गालिब के पास उसका एक ऐसा दोस्त आया जिसे आम पसंद न थे। इतने में गली से गुजरते हुए एक गधा आ निकला, वह गुठली को सूंघ कर अपने रास्ते चला गया। इस पर दोस्त ने गालिब को लक्ष्य कर व्यंग्य किया–"गालिब साहब, देखते हैं न? गधे भी आम को नहीं छूते।" "जी हाँ, गधों को आम पसंद नहीं आते।" गालिब ने चमत्कार पूर्ण शब्दों में जवाब दिया।

[४]

घावों के भरने के बाद अबू अल हसन को घर पर बैठे रहना नामुमकिन सा मालूम होने लगा। वह पहले की भाँति सूर्यास्त के समय पुल के छोर पर बैठकर अजनबियों का इंतज़ार करने लगा।

वह पुल के पास फिर जब पहली बार गया, वही दिन खलीफ़ा का वेष बदलकर संचार करके लौटने का दिन था। हसन ने शहर में आनेवाले लोगों को देखा तो उसे मोसल का सौदागर तथा उसके पीछे एक भीमकाय गुलाम दिखायी दिये।

एक बार परिचय होने के बाद फिर उनसे संपर्क रखने की आदत न होने की वजह से हसन ने अपनी दृष्टि हटा ली और नदी की ओर ताकने लगा। मगर खलीफ़ा उसे छोड़ना नहीं चाहता था। उसके जरिये खलीफ़ा को बड़ा मजा आया था। अलवा इसके हसन के घर लौटने के बाद उसकी तक़लीफ़ों तथा पागलखाने में उसे जो कष्ट दिये गये थे, इन सब के बारे में खलीफ़ा जब-तब दरियाफ़्त किया करता था। इसलिए किसी न किसी रूप में खलीफ़ा ने उसे पुरस्कार देना चाहा।"

सह सोचकर खलीफ़ा हसन के पास पहुँचा, उसके कंधे पर ठोढ़ी टिकाये बोला– "दोस्त अबू अल हसन, खैरियत से हो?. तुम से गले लगने की मेरी इच्छा हो रही है।"

हसन अपनी दृष्टि को हटाये बिना बोला–"जाओ, जाओ, मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कौन हो?"

"मैं ने तो बड़ी आसानी से तुम्हें पहचान लिया है। एक महीने पहले तुम्हारे घर एक दिन मजे में बिताया।

मगर तुम यह कहे कि तुम मुझे नहीं जानते तो मैं कैसे यक़ीन करूँ?" खलीफ़ा ने कहा।

"अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैं तुमको नहीं जानता, तुम अपने रास्ते चले जाओ।" हसन ने कहा।

"क्या तुम अपने मेहमान को ही भुल गये?" खलीफ़ा ने फिर पूछा।

हसन ने इस बार कोई जवाब नहीं दिया, पर चले जाने का हाथ से संकेत किया। खलीफ़ा ने हसन के गले में दोनों हाथ डाल कर कहा–"तुम्हारा यह व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम मुझे फिर एक बार अपने घर ले जाओ और मुझे सच्ची बात बता दो कि तुम मुझसे नाराज़ क्यों हो। तब तक मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। तुम्हें देखने पर लगता है कि तुम मुझसे नाराज़ हो?"

अबू अल हसन क्रोध में आकर चिल्ला उठा–"मुझे इतनी सारी तक़लीफ़ें देकर फिर मेरे मेहमान बनकर आने की बात कैसे पूछते हो? तुम मुझे अपने चेहरा तक मत दिखाओ।"

इस बार खलीफ़ा ने हसन को गले लगा कर धीरे से कहा–"दोस्त, मेरे आने से अगर तुम्हें कोई तक़लीफ़ हुई हो तो यक़ीन करो कि मैं ने जान-बूझ कर तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं दी है। तुम्हें जो कष्ट

हुआ है, बतला दो तो उस की प्रतिक्रिया करने के लिए मैं तैयार हूँ।" इसके बाद वह भी हसन की बगल में पुल पर जा बैठा।

इस पर हसन नरम पड़ गया और बोला–"उस रात को तुम किवाड़ बंद किये बिना चले गये। उसके बाद मुझे जो तकलीफ़ें हुईं, वे सारी बातें तुम्हें सुनाऊँगा।" इन शब्दों के साथ हसन ने सारा वृत्तांत सुना या। खलीफ़ा के महल में उसे जो अनुभव हुए थे, उन्हें हसन को जादू मानते देख खलीफ़ा को जबर्दस्ती अपनी हंसी को रोकना पड़ा।

इस पर हसन ने कहा–"मेरी तक़लीफ़ें तुम्हें मजाक़ सी लगती हैं। मेरी बातों

"मैं तुम को लाचार होकर अपने मेहमान बना कर ले जा रहा हूँ, मगर तुम से मेरी यही प्रार्थना है कि तुम लौटते वक़्त किवाड़ बंद करना न भूलो।"

खलीफ़ा ने यह कहते हुए कि ऐसा ही होगा, जबरन अपनी हंसी को रोका।

दोनों हसन के घर पहूँचे। एक गुलाम ने उन्हें खाना परोसा, शराब भी दी। शराब पीकर खलीफ़ा ने अचानक पूछा–"दोस्त, कभी स्त्रियों ने तुम्हें अपनी ओर आकृष्ट नहीं किया? शादी करने की तुम्हारी इच्छा नहीं होती?"

पर तुम्हें यक़ीन न हो, तो मेरी पीठ पर कोड़ों की मारों को तो देखो।" हसन ने कमीज़ उतार कर हाथ, तथा पीठ पर कोड़ों के जो निशान पड़े थे, दिखाया।

उन निशानों को देख खलीफ़ा की आँखें डबडबायीं, प्यार के साथ हसन के गले लगकर बोला–"भाई, मुझे आज फिर अपने घर मेहमान बनाकर ले जाओ! इसके बदले में अल्लाह तुम्हारे लिए इसके दस हज़ार गुना भला करेगा!"

एक व्यक्ति को दो बार आतिथ्य देना हसन के नियम के विरुद्ध था। फिर भी उसे अपना यह नियम तोड़ना पड़ा। वह खलीफ़ा को अपने घर ले जाते हुए बोला–

इस पर हसन ने कहा–"मुझे तो दोस्तों के साथ वक़्त काटने में बड़ा मजा आता है। शराब और मीठी बातचीत हो तो मेरा मन दूसरी बातों में नहीं जाता। इसका यह मतलब नहीं कि मैं स्त्रियों को बिलकुल पसंद नहीं करता हूँ। सैतान ने उस विचित्र सपने में मुझे ऐसी जवान लड़कियों को दिखाया, जो हमेशा हँसते, नाचते, गाते सामनेवाले व्यक्ति की ज़रूरतों को जानकर उनकी पूर्ति किया करती हैं, वैसी एक युवती को चाहे धन देकर भी खरीद करके, उससे शादी कर प्यार कर सकता हूँ। मगर ऐसी युवतियाँ तो किसी खलीफ़ा या वजीर जफ़र के अंतःपुरों में ही होंगी। इसलिए मैं ऐसी आशाएँ नहीं रखता।

साधारण औरतों की नाक-भौं सिकोड़ना, तुनक कर बोलना मुझे बिलकुल पसंद नहीं, ऐसी औरतों के साथ वक़्त जाया करने के बदले अकेले रहते दोस्तों की संगत में ख़ुशी मनाना मुझे ज्यादा अच्छा लगता है।"

इन शब्दों के साथ खलीफ़ा के हाथ से लोटा लेकर हसन ने शराब पी और बेहोश होकर गिर पड़ा। खलीफ़ा ने इस बार भी उस शराब में बेहोशी की दवा मिलायी थी।

खलीफ़ा का संकेत पाते ही उसके साथ रहनेवाला गुलाम हसन को कंधे पर डाल चल पड़ा। उसके पीछे खलीफ़ा बाहर आया, पर इस बार उसने सावधानी से किवाड़ बंद किया, क्योंकि इस बार हसन को घर लौटाने का उसका इरादा न था।

खलीफ़ा तथा हसन को ढोकर लाने वाला गुलाम दोनों गुप्त मार्ग से राजमहल में पहुँचे। पिछली बार की भाँति खलीफ़ा ने हसन को अपनी पोशाकें पहनवायीं और उसे अपने बिस्तर पर लिटवा दिया। इसके बाद मन्शूर को बुलाकर आदेश दिया कि वह खलीफ़ा को नमाज के वक़्त से पहले ही जगा दे, तब वह दूसरे कमरे में जाकर सो गया।
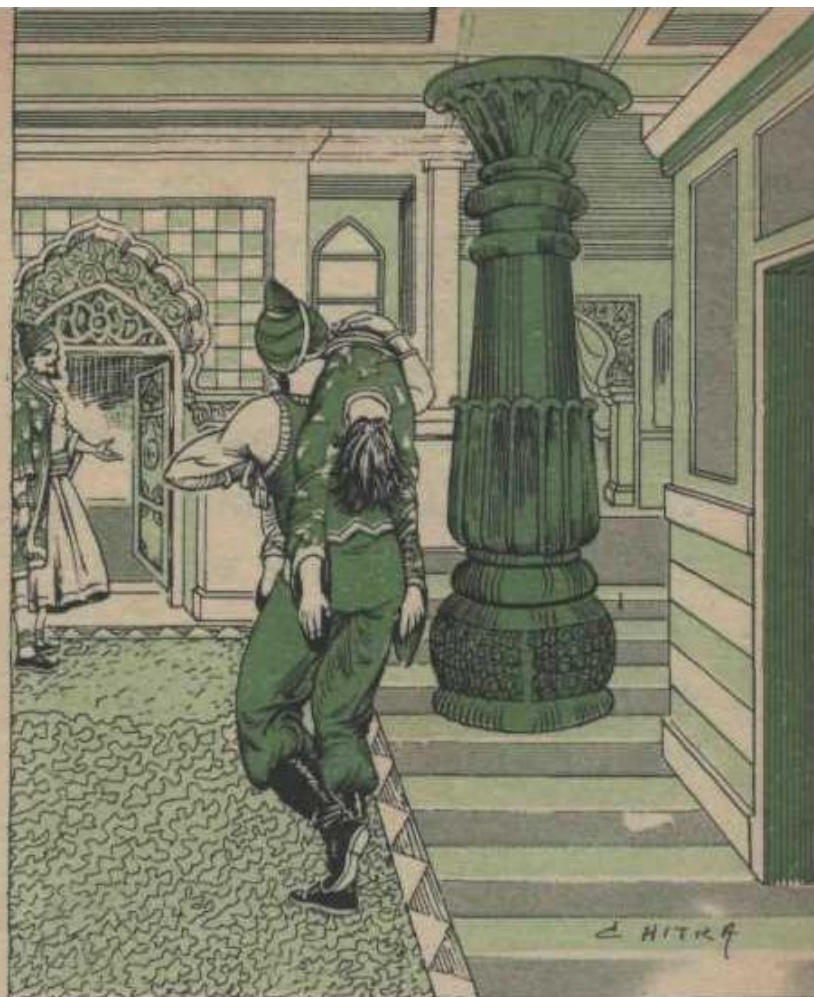
दूसरे दिन सवेरे मन्शूर ने आकर वक़्त पर खलीफ़ा को जगाया। खलीफ़ा हसन के कमरे में गया। वह नशे में गहरी नींद सो रहा था। पिछली बार हसन ने जिस जिस कमरे में जिन-जिन युवतियों को देखा था, उन सब को बुला भेजा। गाने-बजानेवालों को बुलवाकर उन्हें अपनी-अपनी जगह खड़ा कर दिया। सबको आदेश दिया कि उन्हें क्या क्या करना है। तब हसन की नाक के पास एक द्रवपदार्थ सुंघाने का आदेश दे खलीफ़ा पर्दों की ओट में जा छिपा।

द्रवपदार्थ की गंध के लगते ही हसन का नशा उतर गया। उसी वक़्त एक अद्‌भुत

संगीत सुनायी पड़ा। कुछ क्षणों तक हसन ने आंखें मूंदकर ही संगीत सुना। तब आँखें खोलकर चारों ओर नज़र दौड़ायी। यह तो वही कमरा था जिसे पहले एक बार देखा था। वही सजावट, वही बिस्तर, इन से भी बढ़कर विचित्र बात तो यह थी कि वे ही युवतियाँ! वह उठ बैठा और जोर से आँखें मल लीं।

संगीत रुक गया। सारे कमरे में शांति छा गयी। हसन के देखते ही औरतों की आँखें झुक गयीं।

हसन ने आवेश में आकर कहा–"अरे, हसन, माँ के बेटे! फ़िर तेरा चमड़ा उधेड़ दिया जायगा। आज यह भ्रम, कल कोड़ों की मार! जंजीरें और अंधेरी कोठरी! अरे मोसल के सौदागर, तुम फिर किवाड़ बंद किये बिना चले गये हो रे! तुम्हें नरक में डालकर तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ दी जायेंगी! मोसल के सभी सौदागरों का नाश हो! मोसल शहर मिट्टी में मिल जाय।" यों चिल्ला उठा, फिर भ्रम को हटाने के ख़्याल से कई बार आँखें बंद कर फिर खोल कर देखा। इसके बाद वह मन ही मन बोल उठा–"अरे बेक़िस्मतवाले! फिर लेटकर सो जा। शैतान के छोड़ने तक न उठ, यह बात याद रखो कि इन औरतों की ओर देख लिया तो कल तेरी हालत क्या होगी।" फिर चादर तानकर लेट गया। उसके सो जाने का यक़ीन पैदा होने के लिए खुर्राटे लेने लगा।

ये सब दृश्य पर्दे के पीछे से देखनेवाला खलीफ़ा हँसी के मारे लोट-पोट होता जा रहा था। मगर हसन कैसे सो सकता था। उसके लिए अत्यंत प्यारी 'गन्ना' नामक युवती उसकी बगल में बैठकर बोल रही थी–"हुज़ूर की मेहर्बानी हो! सवेरे के नमाज़ का वक़्त हो गया है।"

हसन चादर में से गरज उठा–"शैतान, तुम चली जाओ।"

"हुज़ूर ने कोई बुरा सपना देखा होगा। मैं शैतान नही हूँ, गन्ना हूँ।" युवती ने जवाब दिया।

हसन ने चेहरे पर से चादर उठा कर आँखें खोलकर देखा, गन्ना बिस्तर पर बैठी हुई थी। बाक़ी युवतियाँ तीन क़तारों में खड़ी हुई थीं। उन सबके नाम हसन जानता था।

"तुम सब कौन हो? मैं कौन हूँ?" हसन ने उन युवतियों से पुछा।

सब ने एक स्वर में जवाब दिया–"आप हमारे खलीफ़ा हारूनल रशीद हैं।"

"क्या मैं अबू अल हसन नहीं हूँ?" हसन ने फिर पूछा।

"पाप शांत हो! आप अबू अल हसन बिलकुल नहीं, हमारे हुज़ूर हैं।" सब ने एक स्वर में उत्तर दिया।

हसन ने गन्ना की ओर मुड़कर कहा–"चाहे किसी भी दृष्टि से सही, यह उत्तम होगा, अरी लड़की, तुम मेरे कान काट लो।"

गन्ना ने ज़ोर से उसका कान काट लिया। हसन चिल्लाकर बोला–" मैं सचमुच हारूनल रशीद हूँ !"

फिर संगीत शुरू हो गया। सभी युवतियाँ एक दूसरे के हाथों में हाथ डाले चारपाई के चारों तरफ़ नाचने लगीं। हसन अपनी खुशी को रोक न पाया। चादर को एक तरफ़ तथा तकियों को दूसरी ओर फेंककर औरतों के साथ वह भी नाचने लगा।

खलीफ़ा अपनी हँसी को रोक न पाया, ज़ोर से अट्टहास करते हुए वह पर्दे से बाहर आया और बोला–" हसन, तुमने मुझे हँसाकर मार डाला।"

एक साथ अचानक नाच बंद हुआ। युवतियाँ सब जड़वत् जहाँ की तहाँ खड़ी रह गयीं। सब के साथ हसन भी खड़ा रह गया। उसने खलीफ़ा को देखते ही पहचान लिया कि वह मोसल का सौदागर है। उसे हठात् सारी बातें समझ में आ गयीं।

हसन ने भाँप लिया कि उसके साथ खलीफ़ा ने कैसा प्रहसन रचा है। यह जानते हुए भी कि उसके सामने स्वयं खलीफ़ा खड़ा हुआ है, वह हिम्मत के साथ उसकी ओर लांघकर बोला–" अजी, मोसल के सौदागर, तुम ने किवाड़ बंद नहीं किये, इस अपराध में तुम्हें क्या करनेवाला हूँ, जानते हो ?"

खलीफ़ा फिर अट्टहास कर उठा। हसन को गले लगाते हुए बोला–" भाई, तुमने जो तक़लीफ़ें उठायीं, इस के बदले में मैं तुम्हारी सब से बड़ी इच्छा की पूर्ति करके तुमको अपने रिश्तेदारों में मिला लूँगा, समझें।"

इसके बाद खलीफ़ा ने अपनी पोशाकों में से क़ीमती वस्त्र निकलवाकर हसन को पहनवाया, तब पूछा–" हसन, मांग लो, तुम जो चाहो, सो दे देता हूँ।"

हसन ने खलीफ़ा को सलाम करके कहा– " हुज़ूर ! ज़िंदगी भर आप के आश्रय में जगह मिले तो उसी को मैं बड़ी संपत्ति मान लूँगा।" (अगले अंक में समाप्त)

ना लायक!

प्राचीनकाल में कलिंग देश पर धीरसिंह शासन करता था। वह एक बार भयंकर चमड़े की बीमारी का शिकार हो गया। अनेक इलाज़ कराये गये, पर कोई फ़ायदा न हुआ, बल्कि बीमारी बढ़ती ही गयी। इस पर राजवैद्य ने बताया–"महाराज, इसका एक मात्र इलाज़ यही है कि किसी ना लायक़ के खून को आपके शरीर पर मलना होगा ? वरना यह बीमारी दूर न होगी।"

राजा के सैनिक सारे देश में खोज-ढूँढ कर एक ना लायक़ को पकड़ लाये। उसका नाम अष्टावक्र था। वह कोई काम जानता-वानता न था। अलावा इसके उसके माँ–बाप भी उसे देख घृणा करते थे। इसलिए उन लोगों ने अष्टावक्र को सोना लेकर बेच दिया।

राजा के सामने जब सैनिक अष्टावक्र का वध करने लगे, तब वह अट्टहास करके बोल उठा–"इसका मतलब यह रहा कि मैं ना लायक़ नहीं हूँ। मेरे खून के बराबर का औषध इस पृथ्वी भर में कहीं नहीं है।"

यह बात सुनने पर राजा ने अष्टावक्र को मुक्त किया, राजवैद्य को डांट कर एक दूसरे औषध के द्वारा अपनी बीमारी का इलाज़ करवाया।

रानी और दासी

वैशाली नगर में हीरादत्त नामक एक धनी था। उसे बहुत समय तक कोई संतान न थी, आखिर उसकी चालीस साल की उम्र में सोने की गुड़िया जैसी एक सुंदर लड़की पैदा हुई। इस पर हीरादत्त की ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

मगर उसकी ख़ुशी शीघ्र ही दुख में बदल गयी। उस शिशु को एक दिन ठण्ड़ी हवा में बाहर एक झूले में लिटाया गया। इतने में कहीं से एक बहुत बड़ा बाज आया और शिशु से लपेटे हुए कपड़ों को अपनी नाक तथा पैरों से पकड़कर उस शिशु के साथ कहीं उड़ गया। हीरादत्त ने उस बाज का शिकार करके शिशु को छुड़ाने के लिए शिकारियों को भेजा। सभी देशों में उसने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो उसके शिशु को ला देगा, उसे अपार धन दिया जायगा, मगर उसके प्रयत्न सफल नहीं हुये।

असल में बात यह थी कि हीरादत्त की लड़की को उठा ले जानेवाला बाज न था, बल्कि शाप के कारण थोड़े समय के लिए यक्षलोक से बहिस्कृत एक यक्षिणी थी जो पक्षी के रूप में आसमान में उड़ते हीरादत्त की लड़की को देख प्रसन्न हो उठी और उसे पालने का निश्चय कर लिया।

उस लड़की को पक्षी उठा ले गया था, इस कारण से हीरादत्त की पुत्री का नाम शकुंत कुमारी पड़ा।

शकुंत कुमारी यक्षिणी के पालन-पोषण में दुनियाद्रारी का ज्ञान प्राप्त कर सकी, अनेक प्रकार की युक्तियों से परिचित हो गयी और कालांतर में सोलह साल की हो गयी।

एक दिन यक्षिणी ने शकुंतकुमारी से कहा–" बेटी, मेरे शाप की अवधि पूरी हो

ए. सी. सर्कार, जादूगर

गयी है। अब मैं अपने लोक में जा रही हूँ। तुम्हें सौंदर्य के साथ तेज़ बुद्धि भी प्राप्त है। कोई भी राजकुमार तुम्हारे साथ प्रसन्नतापूर्वक विवाह करेगा! तुम इस रास्ते से जाओगी तो तुम्हारे पिता का वैशाली नगर दिखाई देगा। तुम अपने माता-पिता से मिलकर योग्य व्यक्ति के साथ विवाह करो और मैंने तुम्हें जो विद्याएँ सिखायीं, उनका प्रयोग कर सुखपूर्वक जीवन बिताओ।" ये शब्द कहकर यक्षिणी अपने लोक में चली गयी।

शकुंतकुमारी ने अपना अधिकांश जीवन जंगल के बीच बिताया था, फिर भी वह समस्त प्रकार के सभ्य जीवन से परिचित थी। इसलिए उसने सभ्य जीवन में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया और वैशाली नगर की ओर चल पड़ी।

जंगल में थोड़ी दूर चलने पर उसे एक जगह एक विचित्र राजमहल दिखाई दिया। शकुंतकुमारी ने उस महल में प्रवेश किया। उसमें हाथी, घोड़े, द्वारपाल, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ सब गहरी नींद सो रहे थे। और भीतर जाकर उसने एक शयन कक्ष में प्रवेश किया।

वहाँ पर एक सुंदर राजकुमार लेटा हुआ था। उस कक्ष की दीवार पर एक चित्र लटक रहा था, जिसमें वही राजकुमार घोड़े पर सवार था। मगर उसके कंठ में एक हार चित्रित था। पर वह हार उस वक़्त राजकुमार के कंठ में न था। वह हार राजकुमार के चरणों के पास एक पेटी में रखा गया था।

शकुंतकुमारी के मन में यह विचार आया कि उस हार के उसके कंठ में न होने तथा उसकी गहरी नींद का कोई संबंध हो! इसका पता लगाने के ख़्याल से शकुंतकुमारी ने हार को पेटी से निकाला और राजकुमार के वक्ष पर टिका दिया। तुरंत राजकुमार करवट बदलकर ऐसा प्रतीत हुआ, मानों वह जागने जा रहा हो।

शकुंतकुमारी ने उस हार को पुनः उसी पेटी में रख दिया। यात्रा के कारण उसके कपड़ों पर धूल जमी हुई थी। उसके कपड़े सब मैले व फटे हुए थे। इसलिए शकुंतकुमारी ने सोचा कि राजकुमार के जागने के पहले स्नान करके, राजमहल से सुंदर वस्त्र निकालकर पहन ले, और वह भी सुंदर दिखाई दे।

वह उस कमरे में से अच्छे वस्त्र निकाल कर समीप के तड़ाग के पास गयी और स्नान करने लगी।

उस वक़्त शकुंतकुमारी ने देखा कि एक कुबड़ी औरत रोती हुई उस रास्ते से जा रही है। वह कुबड़ी देखने में भी बदसूरत थी, फिर भी उसके दुख को देख शकुंतकुमारी द्रवित हो गयी और उसने पूछा–"तुम जाती कहाँ हो? और रोती क्यों हो?"

"मेरे पति ने मुझे घर से निकाल दिया, मैं किसी शेर के मुँह में जाऊँगी? अब कैसे दिन बिता सकती हूँ?" कुबड़ी ने दुख भरे स्वर में उत्तर दिया।

"तुम चिंता न करो। तुम्हारे पोषण का भार मैं ले लूँगी। तुम उस महल के पास जाकर मेरा इंतज़ार करो, मैं अभी स्नान करके आ जाती हूँ।" शकुंतकुमारी ने कहा।

कुबड़ी राजमहल में प्रवेश करके राजकुमार के कक्ष में चली गयी। उसे भी हार को देखने पर संदेह हुआ। उसने पेटी में से हार निकालकर राजकुमार के

कंठ में पहना दिया। शीघ्र ही राजकुमार जाग उठा, साथ ही राजमहल के सभी लोग जाग पड़े।

अपनी निद्रा को छुड़ानेवाली कुबड़ी के साथ राजकुमार ने विवाह करने का निश्चय कर लिया।

"मैं एक राजकुमारी हूँ, मेरी दासी अभी आ जायगी।" कुबड़ी ने राजकुमार से कहा।

थोड़ी ही देर में शकुंतकुमरी वहाँ आ पहुँची। राजमहल के सभी कर्मचारियों को जागते देख उसने समझ लिया कि उसके साथ धोखा हो गया है। शकुंतकुमारी के वहाँ पहुँचते ही कुबड़ी ने राजकुमार से कहा-"यही मेरी दासी है!"

शकुंतकुमारी ने कुबड़ी की निंदा की और राजकुमार को सारी बातें समझा दीं।

इस पर राजकुमार ने कहा-"मैं समझ नहीं पाता हूँ कि तुम दोनों में से कौन दासी है और कौन रानी है? और कौन किसको धोखा दे रही है? मैं अभी अभी नींद से जाग उठा, मेरे जागते ही यह कुबड़ी सामने दिखायी दी। मेरा ख्याल है कि मैं इसी का ऋणी बन गया हूँ।"

"मैं अभी फ़ैसला करूँगी कि कौन रानी है? और कौन दासी है? मैं काग़ज़ के कुछ टुकड़ों पर 'रानी' तथा 'दासी' लिखकर सब टुकड़ों को एक पेटी में डाल दूँगी। तब आँखें मूँदकर 'रानी' वाले सभी टुकड़ों को निकालूँगी। पेटी में

जो टुकड़े बच रहेंगे उन पर 'दासी' लिखा रहेगा।"

इस शर्त को राजकुमार ने मान लिया।

शकुंतकुमारी ने कागज़ के कुछ टुकड़े किये। उन पर 'रानी' तथा 'दासी' अलग अलग लिखकर एक पेटी में डाल दिया और आँखें मूंदकर 'रानी' लिखे गये सब टुकड़ों को निकाला। पेटी में जो टुकड़े बच रहें, उन पर 'दासी' लिखा गया था।

इसे देख कुबड़ी का शरीर काँप उठा। उसने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया। शकुंतकुमारी ने कुबड़ी को क्षमा कर उसे अपनी दासी बना ली। इसके बाद राजकुमार तथा शकुंतकुमारी का विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ। उस विवाह में भाग लेने के लिए वैशाली नगर से शकुंतकुमारी के माता-पिता भी आ पहुँचे। बचपन में ही खो गयी अपनी पुत्री को पाकर शकुंतकुमारी के माता-पिता फूले न समाये।

इसके उपरांत शकुंतकुमारी ने अपना सारा वृत्तांत अपने माता-पिता को सुनाया। इस पर उसकी माँ ने विस्मय के साथ पूछा-"कागज़ के सही टुकड़ों को निकालने में तुमने कोई युक्ति की होगी! वह कैसी युक्ति है?"

शकुंतकुमारी ने मुस्कुराते हुए यों कहा-"माँ, कैंची से काटे गये गत्ते के टुकड़ों को लेकर प्रत्येक को मैंने तीन तहों में मोड़ दिया। उसमें बीचवाले भाग में 'रानी' तथा दोनों छोरों के टुकड़ों में 'दासी' लिखकर प्रत्येक गत्ते को तीन टुकड़ों में फाड़ दिया। 'रानी' लिखे गये प्रत्येक टुकड़े के दोनों छोर खुरदरे थे और 'दासी' वाले टुकड़ों के एक छोर खुरदरा तथा दूसरा छोर चिकना था। इसलिए 'रानी' वाले टुकड़ों को उंगलियों से पहचान लेना आसान था। कुबड़ी ने मुझे जो धोखा दिया था, उसके बदले में मैंने उसे भी इस तरह दगा दिया।"
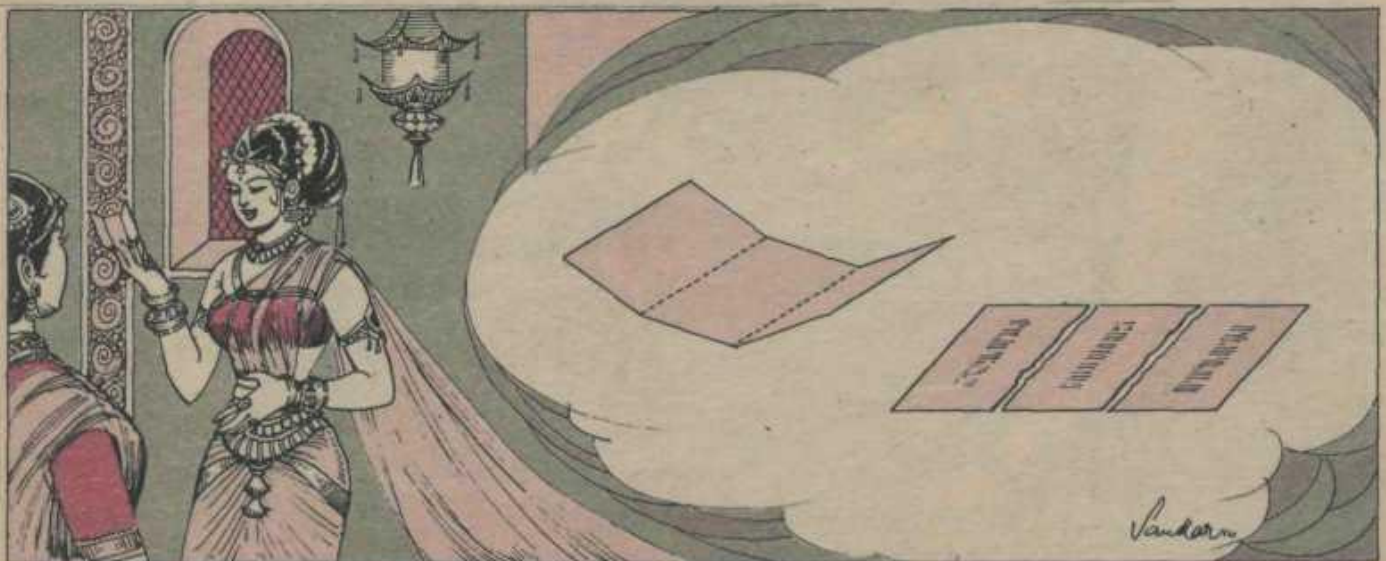
सचाई की जीत

रामापुर नामक गाँव में मंगलदास नामक एक जमीन्दार था। वह क्रोधी था, लेकिन उस में एक अच्छा गुण था। वह ईमानदारी से काम करनेवालों के प्रति बड़ी दया करता था।

मंगलदास ने अपने खेत का काम करने के लिए दो किसानों को नियुक्त किया। एक का नाम सोम था, दूसरे का नाम सूरजभान था। सोम काम चोर न था, वह सदा कुछ न कुछ काम किया करता था। मगर सूरजभान इसके बिलकुल विपरीत था।

जिस दिन वे दोनों जमीन्दार के यहाँ काम पर लगे, सोम तुरंत काम पर लग गया, मगर सूरजभान काम करना छोड़ कहीं चला गया। शाम को अपना काम पूरा करके सोम ने बैलों को तालाब के पास ले जाकर नहलाया और वह खुद अपने शरीर को धोने लगा। तब सूरजभान वहाँ पर आ पहुँचा, अपने बैलों पर कीचड़ मल कर सोम से पहले ही अपने मालिक के घर पहुँचा।

मंगलदास ने सूरज को देख सोचा कि वह दिन भर कड़ी मेहनत करके लौटा है, तब अपनी पत्नी से बोला–"सूरज मन लगा कर मेहनत करता है, उसे ज्यादा खाना खिलाओ।"

इतने में सोम भी आ पहुंचा, पर उसके बैलों तथा उसके शरीर पर भी कहीं कीचड़ के धब्बे न थे। मंगलदास ने निश्चय कर लिया कि सोम ने बिलकुल काम नहीं किया।

उस दिन से लेकर सोम को आधा पेट तथा सूरज को बढ़िया खाना मिलने लगा।

मंगलदास की पुत्री कमला बड़ी होशियार लड़की थी। नौकरों के खाना खाते वक्त कमला ने भांप लिया कि सोम को भर पेट

लक्ष्मीनारायण शर्मा

खाना नहीं मिल रहा है और सूरज को ज्यादा खाना मिल रहा है। कमला ने इस बात की सचाई का पता लगाना चाहा कि नौकरों के काम के विषय में शायद उस के पिता की गलत फहमी हो गयी हो। एक दिन वह इस बात की जांच करने के लिए खेत पर पहुँची। खेत में सोम अकेला काम करता था। सूरजभान दूर पर एक पेड़ के नीचे सो रहा था।

अपने पिता की भांति कमला मेहनत करनेवालों पर दया रखती थी। उस ने सोम से काम के बारे में पूछताछ की। थोड़ी देर तक उस के काम को देखती रही और खुश होकर घर चली गयी। उसे यह समझते देर न लगी कि सूरज अपने शरीर पर कीचड़ मलकर अपने मालिक को कैसे धोखा दे रहा है।

घर लौटते ही कमला ने अपने पिता से कहा—"पिताजी, खेत का सारा काम सोम अकेला कर रहा है। सूरज दिन भर पेड़ की छाया में सो जाता है और शाम को बदन पर कीचड़ मलकर घर लौटता है। इसे देख तुम समझते हो कि सूरज जी तोड़ मेहनत करता है। इसलिये उसे पेट के उफरने तक खाना दिलवाते हो। उस का खाना नहीं पचता, इसलिए वह जब-तब उपवास भी करता है। मगर कड़ी मेहनत करनेवाला सोम पेट भर खाना न मिलने के कारण सूखकर कांटा होता जा रहा है।"

उस दिन शाम को जब सूरज घर लौटा तब मंगलदास ने उससे पूछा—"तुम खेत में काम-वाम किये बिना शाम को शरीर पर कीचड़ मलकर घर लौटते हो?"

"मालिक, आप यह क्या कहते हैं? मैं दिनभर कड़ी मेहनत करता हूँ। आप से किसी ने झूट कहा है।" सूरज ने कहा।

उसी वक़्त सोम भी घर लौट आया, मंगलदास ने उससे पूछा—"सुनो, सूरज दिनभर खेत में कड़ी मेहनत करता है क्या?"

"सूरज को काम करते मैं ने कभी नहीं देखा है जी!" सोम ने जवाब दिया।

"तुमने यह बात आज तक मुझसे क्यों नहीं बतायी?" मंगलदास ने सोम से पूछा।

"आप ने मुझ से नहीं पूछा, इसलिए मैं ने भी नहीं बताया। मैं उसपर निगरानी रखनेवाले पहरेदार थोड़े ही हूँ?" सोम ने कहा।

इस पर मंगलदास ने सूरज से पूछा–"मेरी बेटी ने बताया कि तुम खेत में काम नहीं करते हो! अब सोम भी कहता है। इसका क्या जवाब दोगे?"

सूरज ने बिना संकोच के कह डाला–"मालिक, असली बात यह नहीं है आप की बेटी रोज़ खेत पर आकर सोम से प्रेमालाप करती है। वे दीनों यह सोच कर मुझ पर शिकायत कर रहे हैं कि कहीं मैं उनका रहस्य प्रकट कर दूं।"

मंगलदास ने सूरज की बातों पर यकीन करके सोम को खूब पीटा और कमला से कहा–"फिर कभी तुम खेत पर जाओगी तो तुम्हारे पैर तोड़ दूंगा।" उस रात को सोम को खाना खिलाने से मना किया।

अपनी चाल के चलते देख सूरज बड़ा खुश हुआ और मन में सोचा कि आइंदा उसे डरने की बिलकुल जरूरत नहीं है।

सूरज जो झुठ बोला था, उसकी वजह से कमला का मन बदल गया। सोम जब अपने मालिक के द्वारा पीठा गया तब से सोम के प्रति कमला के मन में प्यार का उदय हुआ। उस रात को कमला ने
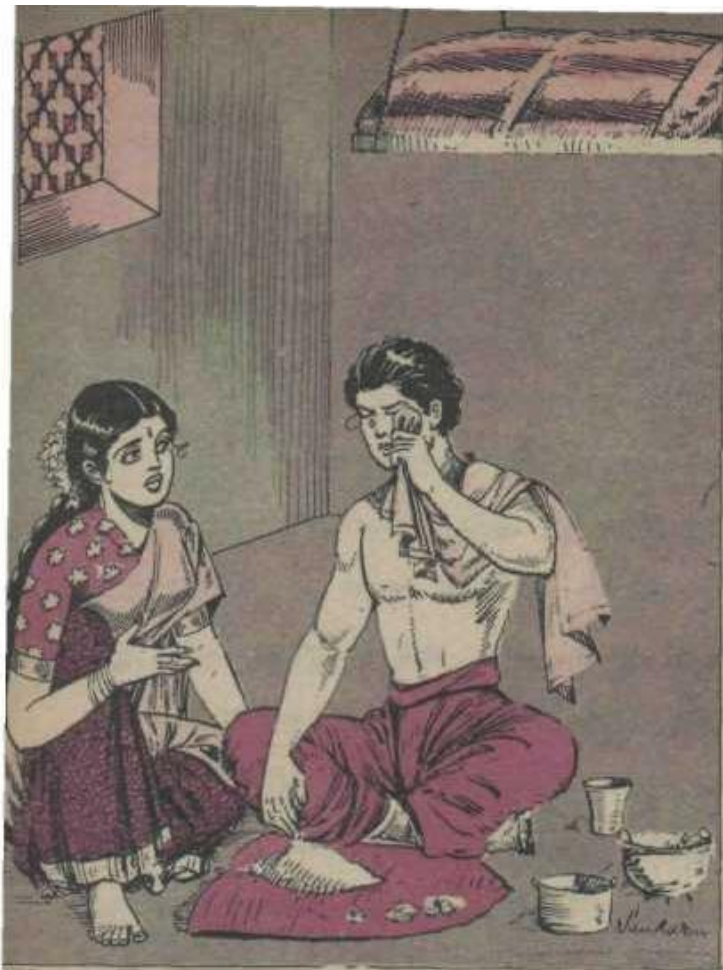
खुद भोजन ले जाकर सोम को खिलाया। इसके उपरंत उसनें अपनी माँ से सूरज की दुष्टता तथा सोम के प्रति जो अन्याय हुआ, सारी बातें समझायीं और कहा– "माँ! सोम कैसा ईमानदार और चरित्रवान है। वह कैसा अच्छा काम करता है। मैंने रोज़ खेत में जाकर उसके साथ मीठी बातें नहीं कीं: यह मेरी गलती थी।"

अपनी बेटी के मन की बात को माँ ने ताड़ लिया। दूसरे दिन नौकरों के खेत में जाने के बाद उसने अपने पति से कहा–"नये नौकरों को रखने के बाद आप बिलकुल खेत पर नहीं जा रहे हैं। एक बार देख तो लीजिये कि काम कैसे चल रहा है?"

मंगलदास को यह सुझाव अच्छा लगा। वह दुपहर के क़रीब खेत में पहुँचा। सोम इस तरह काम में व्यस्त था, मानों अपना निजी खेत हो! सूरजभान पेड़ की छाया में सो रहा था। उसने सोचा कि कमला ने सच्ची बात बतायी है, पर उसने भारी भूल की है। कामचोर को भर पेट खाना देकर ईमानदारी से काम करनेवाले का पेट काट दिया है। उस कामचोर ने गलत-सलत जो कुछ बक दिया, उसकी बातों में आकर सोम को मैं ने खूब पीटा।

मंगलदास पश्चात्ताप भरे मन को लेकर घर लौटा। उसने अपनी भूल पत्नी से बतायी। मगर उसे मालूम न था कि उसकी इस करनी का प्रायश्चित्त क्या है।

"आप हर बात में जल्दबाजी में आकर कुछ कर बैठते हैं। बेटी ने मुझ से असली बात बतायी है। सोम हमारे परिवार के एक सदस्य जैसा है। वह खेत का काम ऐसा नहीं करता मानों पराये लोगों के खेत में करता हो। आपने उसको पीटा, अपनी गलती के न होते हुए भी वह चुप रह गया। हमारे भी कोई पुत्र नहीं है। बेटी की शादी और किसी के साथ क्या करे! सोम के साथ उसकी शादी करे तो हमारी बेटी व दामाद हमारी आँखों के सामने ही रहेंगे।" पत्नी ने समझाया।

पत्नी की बातें सुनने पर मंगलदास को लगा कि उसके मन की सारी व्यथा मिट गयी हो। इसलिए पत्नी की सलाह उसे भी अच्छी मालूम हुई। उस दिन शाम को नोकरों के लौटने के पहले ही मंगलदास ने आवश्यक सारा प्रबंध कर दिया।

शाम को जब सोम और सूरज घर लौटे तब मंगलदास ने सूरजभान से कहा– "अरे सूरज, तुम सोम की मालिश करके उसे उबटन लगा कर गरम पानी से खूब नहलाओ।"

"आप यह क्या करते हैं, मालिक! मैं इस कमबख्त की मालिश करूँ? दिन भर हड्डी तोड़ मेहनत कर लौटा हूँ। यह काम मुझ से न होगा।" सूरज ने जवाब दिया।

"अरे, बकवास बंद कर मेरे कहे मुताबिक़ करो, वरना तेरी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा।" मंगलदास ने डांटा।

सूरज ने अपने मालिक के क्रोध को देख चुपचाप सोम की मालिश की और उसका शरीर उबटन से मलकर गरम पानी से धोया। पर ये सारी बातें सोम की समझ में न आयीं।

स्नान के पूरा होते ही मंगलदास ने सोम को अपनी पंक्ति में खाने के लिए बिठाया। सोम मंगलदास की ओर आश्चर्य के साथ देखने लगा। इस पर मंगलदास ने सोम से कहा–"अरे सोम, तुम मेरे होनेवाले दामाद हो।"

तब जाकर असली बात सोम की समझ में आ गयी। इसके बाद एक अच्छा मुहूर्त एवं लगन देख कर मंगलदास ने अपनी पुत्री का विवाह सोम के साथ ठाठ से किया।

तब जाकर सूरजभान को यह बात मालूम हुई कि ईमानदार तथा सत्य बोलनेवाला सदा सुखी होता है। उस दिन से सूरजभान भी ईमानदारी के साथ मेहनत करने लगा। उस में यह मानसिक परिवर्तन देख मंगलदास भी बड़ा प्रसन्न हुआ।

असभ्य!

पुराने जामाने में बग्दाद नगर पर अहमद नामक खलीफ़ा शासन करता था। उसके मन में अनेक देश जीतकर बादशाह बनने की प्रबल इच्छा थी। मगर उसकी बेटी मेहर को अपने बाप की यह दुराशा कतई पसंद न थी। मगर वह यह बात अपने बाप से कहने की हिम्मत न कर सकी।

खलीफ़ा ने कुछ समय बाद अपनी बेटी की शादी करनी चाही। यह समाचार सुनकर मेहर के साथ शादी करने के लिए कई युवक आगे आये।

"मेरे साथ शादी करने की इच्छा रखनेवाले युवकों को एक कहानी सुनाकर मैं उनसे एक सवाल करूँगी, उसका सही जवाब जो युवक देगा, मैं उसी के साथ शादी करूँगी।" मेहर ने अपने बाप से कहा। खलीफ़ा ने इस शर्त को मान लिया। मेहर के सवाल का जवाब न देने पर बेइज्जती हो जायगी, यह सोचकर कई युवकों ने अपने प्रयत्न को त्याग दिया। मगर एक सुलतान का पुत्र रजाक मेहर के सवाल का जवाब देने आ पहुँचा।

सभी दरबारियों के सामने मेहर ने रजाक को इस प्रकार कहानी सुनायी।

"कई शताब्दियों के पहले मिश्र पर अब्दुल समद नामक सुलतान शासन करता था। उसे अपने राज्य पर संतोष न था, इसलिए चक्रवर्ती बनने की इच्छा से एक भारी सेना लेकर दूसरे देशों पर हमला करने चल पड़ा। आफ्रिका के अनेक राजा अब्दुल से लड़ने की शक्ति न रखते थे। इसलिए वे सब अब्दुल के सामंत बने।

"मगर बेट्सूफा नामक एक व्यक्ति ने अब्दुल की अधीनता को स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसके साथ युद्ध करने का निश्चय किया। उसका सारा राज्य

बिष्णु भाटिया

पहाड़ों तथा जंगलों से भरा पड़ा था। उसके सैनिक भी जंगली थे। वे पहाड़ों तथा जंगलों में से अचानक मिश्र के सैनिकों पर धावा बोल देते और अपने विषैले बाणों द्वारा मिश्र के सैनिकों को मार कर चंपत हो जाते। उनके साथ आमने-सामने हो कर युद्ध करना अब्दुल की फौज के लिए संभव न था।

वास्तव में बेट्सूफा के राज्य को जीतने से अब्दुल का कोई फ़ायदा न था मगर उसका हठ था कि जो शासक उसके आधिपत्य को स्वीकार नहीं करता, उसे आजादी के साथ रहने देना नहीं चाहिये, अतः उस पर विजय प्राप्त करनी है।

इस कारण से अब्दुल ने अपने सैनिकों द्वारा बेट्सूफा के राज्य के जंगलों को कटवा दिया जिस से जंगलियों को छिपने की जगह न हो।

ऐसी हालत में बेट्सूफा अपनी सेना को लेकर अब्दूल के साथ मैदान में युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। इस लड़ाई में मिश्र के सैनिकों की ही विजय हुई। मगर बेट्सूफा के सैनिकों ने मिश्र के अधिक से अधिक सैनिकों को मार डाला और वे सब वीर स्वर्ग को प्राप्त हुये।

लड़ाई के खतम होते ही अब्दुल के मन में बेट्सूफा की लाश को देखने की
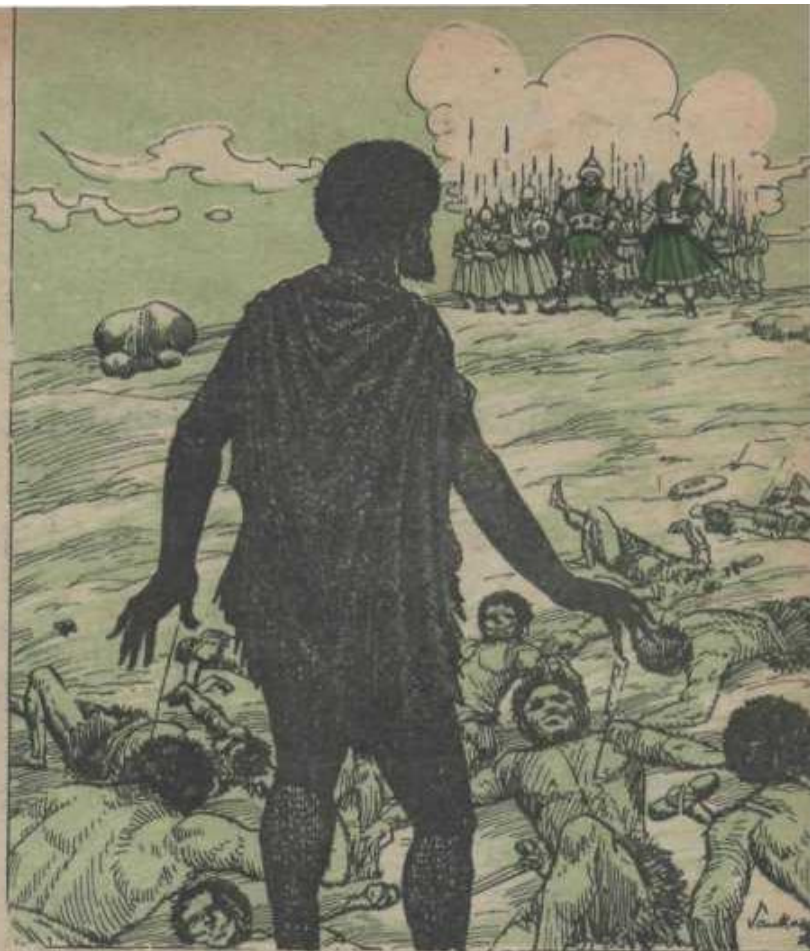
इच्छा हुई। वह अपने कुछ सैनिकों को साथ लेकर लड़ाई के मैदान में पहुँचा।

अचानक उसे लाशों के ढेर के बीच एक काली भयंकर आकृति खड़ी दिखाई दी जो चारों तरफ़ ताक रही थी।

"यह कौन है?" अब्दुल ने अपने सेनापति से पूछा।

"सुनते हैं कि आफ्रिका के जंगलों में मनुष्य का मांस खानेवाले लोग हैं। इसीलिए यह भी शवों को नोच-नोच कर खाने के लिए आया हुआ कोई व्यक्ति होगा।" सेनापति ने जवाब दिया।

इस पर अब्दुल ने मनुष्य का मांस खानेवाले उस व्यक्ति से पूछा—"तुम्हें

जितनी लाशें चाहिये, लेते जाओ, पर तुम यहाँ चारों तरफ़ क्या ताक रहे हो?"

"इन सब को खाने के लिए किसीने इन्हें मार डाला है, मगर मुझे तो एक ही लाश चाहिये। फिर भी इनको मारनेवाले की अनुमति लेकर शव को ले जाना न्याय संगत है न! इसीलिए मैं इन सबकों मारनेवाले के इंतज़ार में चारों तरफ़ ताक रहा हूँ।" काले ने कहा।

इस पर अब्दुल ने हस कर कहा-' इन सबको मैंने ही मार डाला। मगर इन्हें खाने के लिए नहीं, समझे!"

काले आदमी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा-"खाने के लिए न तो इतने सारे लोगों को क्यों मार डाला?"

तब सुलतान न अपने सेनापति से कहा- "यह असभ्य है, जंगली है। इसकी समझ में आने लायक़ समझाना हमारे लिए ना मुमक़िन है।"

काला आदमी ठठाकर हँसते चला गया।

मेहर ने यह कहानी सुना कर रजाक से पूछा-"काले आदमी के हंसने का क्या कारण है?"

"असभ्य और जंगली दीखनवाला वह काला आदमी भूख लगने पर ही मनुष्य को मार डालता है। मगर अपने को सभ्य समझनेवाले अब्दुल ने अपने अधिकार के क्षेत्र को फैलाने की कामना से हज़ारों आदमियों के प्राण लिये। जरा सावधानी से सोचने पर हमें मालूम होगा कि उन दोनों में से असभ्य कौन है। इसलिए वह काला आदमी हंस पड़ा था।" रजाक ने जवाब दिया।

मेहर ने मान लिया कि रजाक ने उसके सवाल का सही जवाब दिया है। इस पर उन दोनों की शादी हो गयी।

मेहर ने जो कहानी सुनायी, तथा रजाक ने उसका जो जवाब दिया, यह सब सुनने के बाद मेहर के बाप खलीफ़ा के मन से चक्रवर्ती बनने की कामना जाती रही। इस प्रकार मेहर अपने बाप के दिल में सुधार ला सकी।

कृष्ण के द्वारका के लिए रवाना होते ही उपप्लाव्य में युधिष्ठिर, विराट तथा अन्य राजा युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। राजा विराट तथा द्रुपद ने मिलकर सभी राजाओं के पास संदेश भेजा कि वे अपने मंत्री, रिश्तेदार तथा मित्रों के साथ तुरंत रवाना होकर चले आवे। इस प्रकार संदेश पाने पर कुछ लोग पांडवों के प्रति अपने प्रेम के कारण उपप्लाव्य में चले आये तो कुछ लोग राजा विराट तथा द्रुपद के प्रति आदरभाव रखने की वजह से चले आये।

धृतराष्ट्र के पुत्रों को जब मालूम हुआ कि उपप्लाव्य में पांडव युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं, तब वे भी अपने मित्रों को संदेश भेजने लगे। इस प्रकार भविष्य में होनेवाले कुरु-पांडव युद्ध की हलचल समस्त देशों में होने लगी। बड़ी भारी सेनाओं के संचार से मानों धरती हिल उठी।

इस बीच द्रुपद अपने पुरोहित को कौरवों के पास दूत कार्य करने के निमित्त भेजते हुए बोला-"हे पुरोहित, तुम प्रज्ञाशाली हो! तुम यह भी जानते हो कि धृतराष्ट्र कैसा व्यक्ति है और युधिष्ठिर किस प्रकार के स्वभाव का है। धृतराष्ट्र जानते हैं कि कौरवों ने पांडवों के साथ कैसा धोखा दिया है। विदुर के मना करते रहने पर भी अपने पुत्र-प्रेम के मोह में पड़कर उन्हों ने युधिष्ठिर को जुआँ खेलने के लिए बुला भेजा। इस वक़्त, कौरवों ने

४४. युद्ध की तैयारी

इसके बाद द्रुपद का पुरोहित अपने शिष्य-समूह को साथ ले हस्तिनापुर के लिए रवाना हुआ।

तदुपरांत पांडवों ने अन्य राजाओं के पास दूत भेजें, मगर कृष्ण के पास अर्जुन स्वयं चल पड़ा। गुप्तचरों के द्वारा सारा समाचार जाननेवाला दुर्योधन कुछ सैनिकों को साथ ले वह भी स्वयं द्वारका के लिए चल पड़ा। अर्जुन तथा दुर्योधन ने भी एक ही दिन द्वारका में प्रवेश किया।

दोनों जब कृष्ण के महल में पहुँचे, तब कृष्ण सो रहा था। कृष्ण के सिरहाने पर एक सुंदर आसन था, इसलिए दुर्योधन सीधे जाकर उस पर बैठ गया। दुर्योधन के पीछे जाकर अर्जुन हाथ बांधे कृष्ण के पैरों के पास खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद कृष्ण ने नींद से जागकर अपने पैरों के पास खड़े अर्जुन को देखा, कृष्ण ने दोनों से कुशल प्रश्न पूछे, तदनंतर अतिथियों का सत्कार करके उनके आगमन का कारण पूछा।

इस पर दुर्योधन ने मुस्काराते हुए कहा– "हे कृष्ण! मेरा निवेदन है कि हमारे बीच होनेवाले युद्ध में तुम मेरे पक्ष में रह कर हमारी सहायता करो। तुम्हारी दृष्टि में मैं और अर्जुन दोनों समान हैं। दोनों तुम्हारे लिए एक ही प्रकार के

निश्चय कर लिया है कि पांडवों को राज्य न दिया जाय। तुम धृतराष्ट्र से धर्म और न्याय की बातें बताओ। विदुर तुम्हारा समर्थन करेंगे। यदि तुम पांडवों की सज्जनता तथा दुर्योधन की शठता का सविस्तार वर्णन कर परिचय दोगे तो उनके पक्ष के लोग अधर्म तथा अन्यायपूर्ण युद्ध करने से पीछे हट जायेंगे। उन के बीच इस प्रकार फूट डालना ही तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है। मेरा विश्वास है कि यह कार्य तुम्हारे द्वारा अवश्य संपन्न होगा। दुर्योधन इत्यादि के द्वारा तुम्हारी कोई हानि न होगी। इसलिए तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं।"

निश्तेदार भी हैं। अलावा इसके मैं ही तुम्हारे पास पहले आया हुआ हूँ। इसलिए मेरी सहायता करना तुम्हारा धर्म भी है।"

इस पर कृष्ण ने कहा—"यह बात सही है कि तुम पहले आये हो! लेकिन मैं ने अर्जुन को पहले देखा है। इसलिए मैं तुम दोनों की सहायता करूँगा। पर अर्जुन छोटा है। इसलिए वह पहले सहायता मांगेगा। मुझ जैसे योद्धा दस लाख हैं। वे सब एक पक्ष में तथा मैं दूसरे पक्ष में रहूँगा। मैं साफ़ बता देता हूँ कि मैं युद्ध नहीं करूँगा, केवल सलाह दूँगा। अर्जुन, तुम बताओ, इन दोनों शर्तों में से तुम किस पक्ष को पसंद करते हो?"

अर्जुन ने कृष्ण को ही चुन लिया। दुर्योधन ने बड़ी प्रसन्नता के साथ दस लाख यादव योद्धाओं को स्वीकार करने को मान लिया। इसके बाद दुर्योधन ने बलराम के पास जाकर युद्ध में सहायता करने की मांग की।

बलराम ने दुर्योधन से कहा—"दुर्योधन, में विराट नगर में जब विवाह देखने गया था, तब मैंने तुम दोनों पक्षों को समान मान कर अपने विचार प्रकट किये हैं। मगर कृष्ण मेरे विचारों से सहमत नहीं हुआ। इसलिए मैंने उसी समय निर्णय कर लिया कि मैं किसी भी पक्ष की

सहायता न करूँ! अलावा इसके तुम्हारे लिए दूसरों की सहायता की क्या आवश्यकता है? जाओ, अपने क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध करो।"

दुर्योधन ने परामानंदित हो कसकर बलराम के साथ आलिंगन किया। मन में ऐसा अनुभव किया, मानों उसीकी विजय हो गयी हो। तब उसने कृतवर्मा के पास जाकर सहायता मांगी। कृतवर्मा ने दुर्योधन को एक अक्षौहिणी सेना दी। इस प्रकार दुर्योधन अपना कार्य पूरा कर हस्तिनापुर को लौट चला।

दुर्योधन के जाने पर कृष्ण ने अर्जुन से पूछा—"मैंने बताया कि युद्ध नहीं करूँगा।
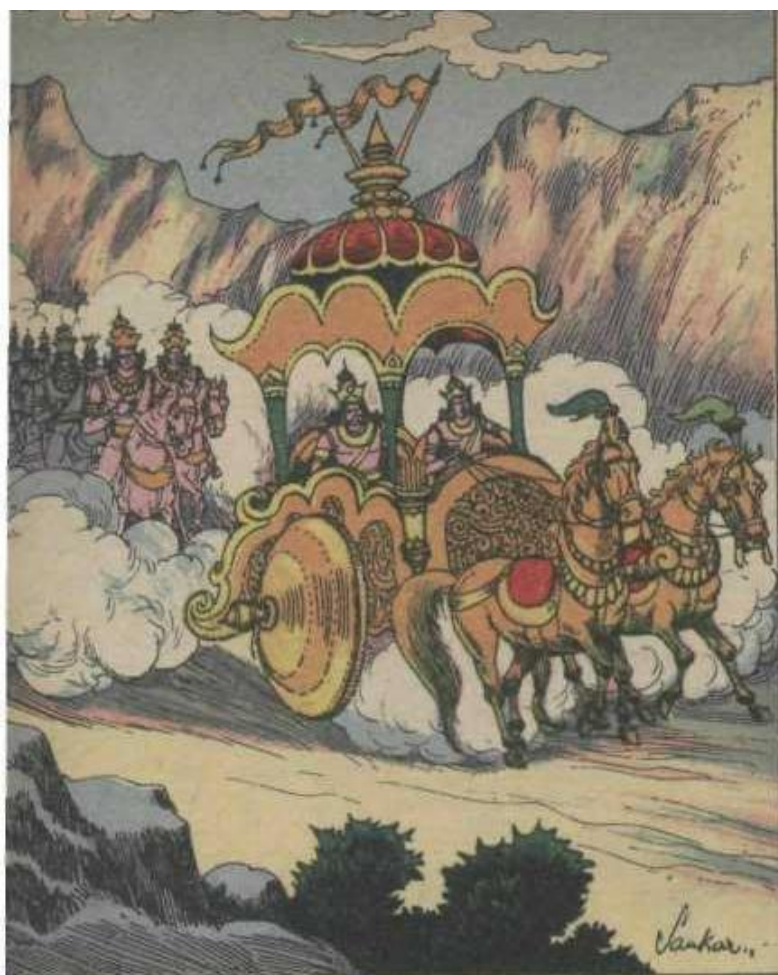
तुमने मुझे चुनकर बड़ी सेना को क्यों त्याग दिया?"

"मैं जानता हूँ कि उस सेना को आप अकेले जीत सकते हैं और अन्य सभी शत्रुओं को मैं अकेले पराजित कर सकता हूँ। आप युद्ध करेंगे तो वह यश आप ही को प्राप्त होगा, लेकिन मुझे क्या बचेगा? मेरे मन में यश की कामना है, इसीलिए मैंने आपको चुना। पर आपको मेरी एक सहायता करनी होगी। आप मेरे सारथी बन जाइये। यह इच्छा मेरे मन में अनेक वर्षों से रही है। आप मेरे सारथी रहे तो मैं सुर और असुर एक साथ मिलकर भी मुझसे युद्ध करने आवे तो भी मैं हरा सकता हूँ। इसलिए कृपया आप मेरी इच्छा की पूर्ति कीजिये।" अर्जुन ने कहा।

"मैं तुम्हारी इच्छा की पूर्ति अवश्य करूँगा।" इस प्रकार आश्वासन दे कृष्ण ने अर्जुन को विदा किया।

मद्रदेश का शासक तथा नकुल और सहदेव के मामा शल्य को पांडवों के दूत ने संदेशा दिया। वह पांडवों की सहायता करने के हेतु एक अक्षौहिणी सेना तथा महारथी अपने पुत्रों को साथ ले चल पड़ा। मद्रदेश की पोशाकें, अलंकार, वाहन तथा रथ अत्यंत विचित्र होते थे। महानवीर तथा पराक्रमशाली शल्य उस विचित्र सेना को साथ ले उपप्लाव्य में आने लगा।

दुर्योधन ने अपने गुप्तचरों के द्वारा जान लिया कि शल्य पांडवों की सहायता करने के हेतु जा रहा है। इसलिए उसने अपने अनुचरों के द्वारा शल्य के हर पड़ाव पर सारी सुविधाएँ करवायीं। उसने डेरे लगवा कर उनका अलंकार करवाया, सुंदर भोजन तथा मनोरंजन का भी प्रबंध कराया। इसलिए शल्य की यात्रा अत्यंत सुखपूर्वक संपन्न हुई। शल्य ने सोचा कि युधिष्ठिर उसके वास्ते यह सारा प्रबंध करा रहा है, यह सोचकर उसने अपने

अनुचरों से कहा–"मेरे लिए ये सारी सुविधाएँ करनेवालों को बुला लाओ, वे जो भी वर मांग लेंगे, दे दूंगा।"

ये बातें सुनकर गुप्त रूप से शल्य के साथ रहनेवाला दुर्योधन शल्य के सामने आया। शल्य ने उसका उचित रूप में सत्कार कर पूछा–"बेटा, तुम्हें जो चाहिये, मांगो! मैं अवश्य दूंगा।"

इस पर दुर्योधन ने कहा–"राजन, आप मेरी सेना के नेता बन जाइये।"

इस पर शल्य ने स्वीकृति दी और कहा–"हे दुर्योधन, तुम अब अपने नगर में चले जाओ। मुझे युधिष्ठिर से मिलना है। उससे बात करके मैं तुम्हारे यहाँ आ जाऊँगा।"

"आप युधिष्ठिर से वार्ता करके शीघ्र आ जाइये। हमारी विजय आप पर निर्भर है।" इन शब्दों के साथ दुर्योधन ने शल्य के साथ आलिंगन किया और हस्तिनापुर के लिए चल पड़ा।

इसके उपरांत शल्य उपप्लाव्य में स्थित पांडवों के सैनिक शिविर में पहुँचा। युधिष्ठिर के द्वारा अतिथि-सत्कार प्राप्त कर नकुल और सहदेव के साथ आलिंगन किया; उन्हें अपने पास ही बिठाकर युधिष्ठिर से कहा–"राजन, कुशल हैं न? ईश्वर की कृपा से आप लोग वनवास तथा भयंकर अज्ञातवास भी पूरा कर चुके। जो लोग राज्य से च्युत हो जाते हैं, उन्हें कष्टों के सिवा सुख कहाँ से प्राप्त होंगे?
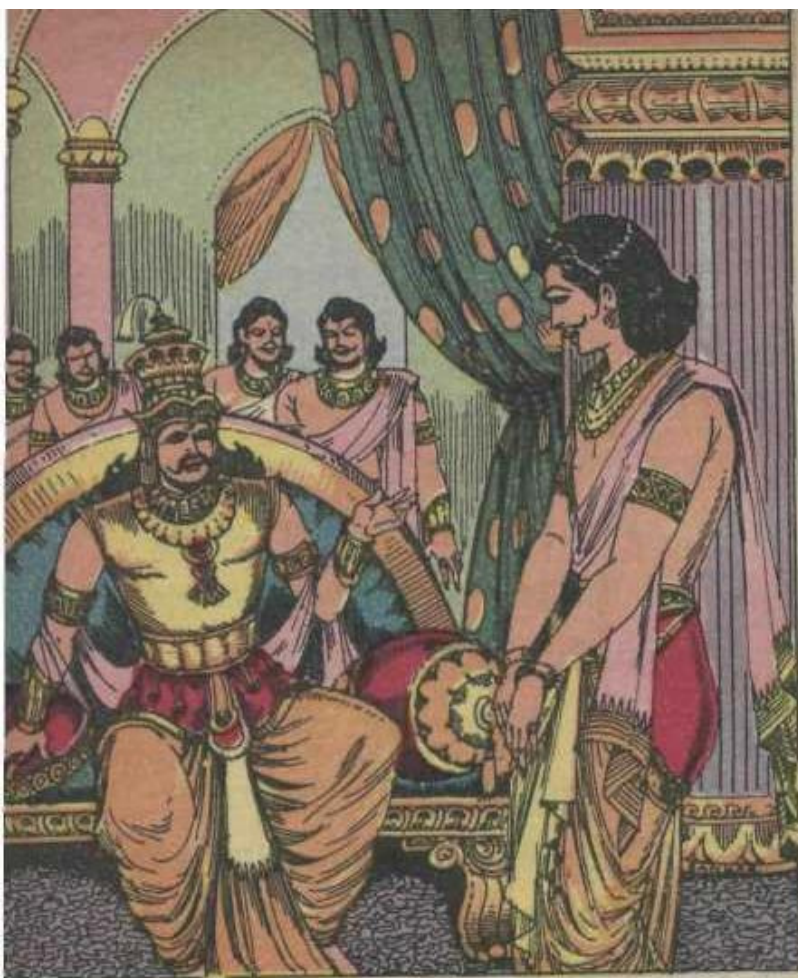
फिर भी इन कष्टों को भोगने के कारण कौरवों को युद्ध में पराजित कर आप सुखी होंगे। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि इन कठिनाइयों के बाद आप तथा आपके भाइयों को आनंद के साथ रहते देख पाया।"

इसके बाद शल्य ने युधिष्ठिर से यह भी बताया कि रास्ते में उसे दुर्योधन को युद्ध में सहायता देने का वचन क्यों देना पड़ा।

सारी बातें सुनकर युधिष्ठिर ने कहा– "राजन, आपने जो कार्य किया, वह उत्तम कार्य ही है। आपको जिसने प्रसन्न किया, उसकी इच्छा की पूर्ति करना बड़ों का कर्तव्य है। मगर आप को मेरी भी एक सहायता करनी होगी। आप युद्ध क्षेत्र में कृष्ण के समान हैं। कर्ण और अर्जुन के बीच जब युद्ध छिड़ेगा तब आप को कर्ण का सारथ्य करना पड़ेगा। इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है। क्योंकि अर्जुन के सारथी कृष्ण की समता कर सकनेवाला व्यक्ति कौरवों में कोई नहीं है। इसलिए आप कर्ण का सारथ्य करते समय अर्जुन की रक्षा कीजिये और कर्ण के उत्साह का भंग कीजिये। आप से यही मेरी प्रार्थना है।"

"आप चिंता न कीजिये। मौक़ा मिलने पर मैं दुष्ट कर्ण की बात देख लूंगा। मैं देखूंगा कि अर्जुन की अवश्य विजय हो जाय।" शल्य ने युधिष्ठिर को आश्वासन दिया।

इसके उपरांत शल्य ने पांडवों के कष्टों की चर्चा करते हुए कहा कि स्वयं इन्द्र ने भी किस प्रकार कष्ट भोगे। उसने यों कहा– "त्वष्ट प्रजापति ने इन्द्र के साथ दगा देने के विचार से इन्द्र को पराजित करा सकनेवाले विश्वरूप की सृष्टि की। विश्वरूप के तीन सर थे। उसने इन्द्र पद के वास्ते तपस्या प्रारंभ की। इन्द्र ने डर कर विश्वरूप की तपस्या को भंग करने के लिए अनेक अप्सराओं को उसके पास भेजा। मगर वे विश्वरूप के मन को विचलित नहीं कर पायीं।

तब इन्द्र ने स्वयं जाकर अपने वज्रायुध से विश्वरूप को मार डाला। इस से इन्द्र का डर जाता रहा। मगर शीघ्र ही इस से भी भयंकर खतरा उसके समक्ष उपस्थित हुआ।

अपने पुत्र का वध इन्द्र के हाथों में हो जाने का समाचार सुन कर त्वष्ट क्रोधित हो उठा और उसने इन्द्र को मारने के लिए वृत्र नामक एक और व्यक्ति की सृष्टि की। प्रलयकाल के सूर्य के समान वृत्र ने अपने पिता के आदेश पर स्वर्ग में जाकर इन्द्र को युद्ध के लिए ललकारा। निरायुध वृत्र ने इन्द्र के आयुधों की उपेक्षा कर उसे पकड़ कर निगल डाला। मगर जब वृत्र जंभाइयाँ लेने लगा, तब इन्द्र बाहर निकल आया और युद्ध करना छोड़ भाग खड़ा हुआ।

इसके बाद इंद्र देवताओं को साथ ले विष्णु के पास गया और वृत्र को मारने का उपाय बताने की प्रार्थना की।

विष्णु ने इंद्र को सलाह दी–"वृत्र इस वक़्त नहीं मरेगा। तुम पहले उसके साथ मैत्री करो।" तब महर्षियों ने वृत्र के पास जाकर समझाया–"तुम इंद्र को जीत नहीं सकते। इंद्र तुमको जीत नहीं सकता। इसलिए तुम दोनों संधि करके सुखपूर्वक रहो।"

वृत्र ने उनके कथनानुसार इंद्र के साथ संधि कर ली तथा इंद्र के साथ मैत्री पूर्वक रहने लगा। मगर इंद्र मौक़े की ताक में था। एक दिन वृत्र अकेले समुद्र तट पर टहल रहा था, तब इंद्र ने अपने वज्रायुध के द्वारा उसे मार डाला।

विश्वरूप तथा वृत्र को मारने की वजह से इंद्र के सर जो पाप लगा था, उसके फल स्वरूप इंद्र का मति-भ्रमण हो गया और सबकी आँख बचाकर वह घूमने लगा। इंद्र का यह हाल होने पर इंद्र पद के लिए एक दूसरे को खोजना पड़ा। तब महर्षियों ने नहुष के पास जाकर निवेदन किया कि वह इंद्र-पद को ग्रहण कर तीनों लोकों पर शासन करे।

शिवपुराण

[२१]

स्वायंभु मनु के जमाने में साठ हज़ार वर्षों तक वर्षा न होने के कारण भयंकर अकाल उत्पन्न हुआ। प्रजा का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। इस भयंकर दृश्य को देख ब्रह्मा ने समस्त संसार को सुधार सकने वाले व्यक्ति को राजा बनाने का संकल्प किया। उन्होंने मनुवंश के रिपुंजय नामक व्यक्ति को अत्यंत चरित्रवान तथा सदाचारी पाया। इस पर ब्रह्मा ने रिपुंजय से कहा–"बेटा, मैं तुम्हें विश्व पर पूरा अधिकार दे देता हूँ। तुम दिवोदास नाम पर पृथ्वी का शासन करो। वासुकी की पुत्री अनंगमोहिनी तुम्हारी धर्मपत्नी बनेगी।"

इस पर रिपुंजय ने कहा–"दादाजी, यदि आप मुझे एक वर प्रदान करेंगे तो मैं पृथ्वी के शासन का भार स्वीकार करूँगा। वह वर यह होगा कि पृथ्वी पर ऊर्ध्व लोक तथा पाताल लोक का एक भी निवासी न हो। यदि आप ऐसा कर सकेंगे तो मैं राज्य-भार स्वीकार करूँगा।"

ब्रह्मा ने यह बात स्वीकार कर ली और यह समाचार उन्होंने काशी विश्वेश्वर को सुनाया। विश्वेश्वर के मान लेने पर रिपुंजय का राज्याभिषेक करके ब्रह्मा अपने लोक में चले गये। रिपुंजय ने दिवोदास नामक उपाधि से राजा बनकर यह ढिंढोरा पिटवाया कि पृथ्वी पर देवता तथा पाताल लोक के निवासी न रहें।

यह ढिंढोरा सुनकर पृथ्वी पर रहनेवाले सभी देवता काशी के विश्वनाथ के पास दौड़ पड़े। उन से विश्वनाथ ने कहा–"ब्रह्मा ने मेरी स्वीकृति लेकर ही दिवोदास

अंतिम पृष्ठ का चित्र
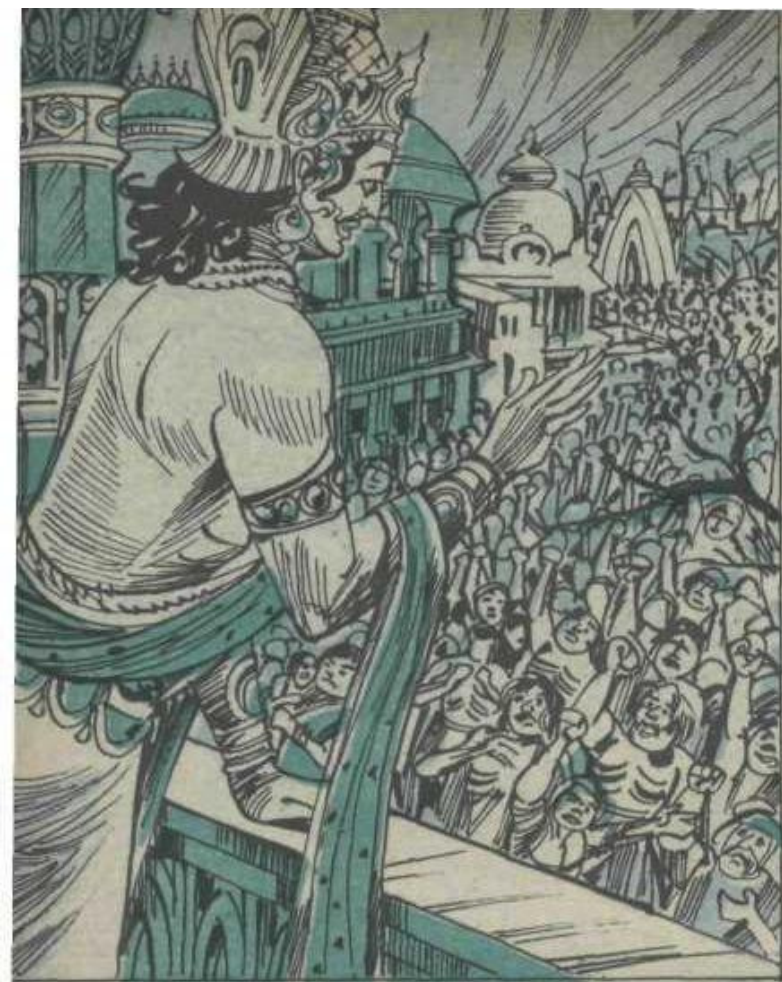
को यह वर प्रदान किया है, इसलिए हम सब मंदर पर्वत पर चले जायेंगे ।"

पृथ्वी पर के सभी देवता चले गये । मंदिरों में पूजाएँ सब बंद हो गयीं । इस पर दिवोदास ने काशी को अपनी राजधानी बनाकर आठ हज़ार वर्षों तक शासन किया । छोटे-मोटे देवता तथा दानव दिवोदास के दरबार में काम करने लगे ।

पृथ्वी से आश्रय खोकर देवता बहुत दुखी हुए और अपने गुरु बृहस्पति के पास जाकर पूछा—"गुरुदेव! दिवोदास को राज्यच्युत करने का कोई उपाय बताइये ।"

"अग्नि, वायु तथा वरुण तो हमारे ही भाई हैं । यदि उन लोगों ने अपनी अपनी शक्तियों को वापस ले लिया तो पृथ्वी का जीवन स्तम्भित हो जायगा । वे लोग खाना नहीं बना सकते । यज्ञ बंद हो जायेंगे, ब्राह्मण राजा से द्वेष करेंगे । इसलिए तुम लोग पहले अग्नि को मनवा लो कि वे पृथ्वी के लोगों के साथ असहयोग करे ।" बृहस्पति ने उन्हें समझाया ।

फिर क्या था, काशी में कहीं आग नहीं सुलगी, खाना नहीं बना, पर लोगों ने दिवोदास को धूप की मदद से खाना बनाकर खिलाया । पर जनता ने आकर शिकायत की । असली बात जानकर दिवोदास ने कहा—"यह तो देवताओं की कुटिल नीति है । तुम लोग घबराओ मत, मैं अपनी तपस्या के द्वारा तुम लोगों को अग्नि, वायु तथा वर्षा प्रदान करूँगा ।" जनता को समझाकर दिवोदास ने ऐसा ही किया ।

मगर शिवजी को काशी का वियोग अत्यंत दुर्भर मालूम हुआ । उन्होंने चौंसठ सिद्धयोगिनियों को बुलवाकर कहा—"तुम लोग अपने वेष बदलकर काशी में जाओ और वहाँ की स्त्रियों के पातिव्रत्य तथा पुरुषों की धर्मबुद्धि का नाश करो । तभी दिवोदास का पतन होगा ।"

सिद्धयोगिनियों ने शिवजी के आदेश का पालन किया, मगर वे अपने कार्य में सफल

न हो सकीं। इस पर शिवजी ने सूर्य से कहा–"तुम काशी में जाकर दिवोदास को धर्मच्युत करने का प्रयत्न करो।"

सूर्य तरह-तरह के वेष धारणकर काशी में घूमता रहा। उसने प्रयत्न किया कि दिवोदास धर्मच्युत हो जाय, मगर दिवोदास में ही नहीं, अपितु उसकी प्रजा में भी रत्ती भर अधर्म दिखाई नहीं दिया। अपने कार्य को पूरा किये बिना वापस लौटना सूर्य को अच्छा न लगा, इसलिए वह लाचार होकर काशी में ही रह गया।

इसके बाद शिवजी ने ब्रह्मा को बुलवा कर कहा–"मैंने दिवोदास को धर्मच्युत कराने के लिए योगिनियों को भेजा, उनके पीछे सूर्य को भी भेजा, मगर वे सब काशी में ही फँस गये। इस बार तुम जाओ, मगर तुम वहीं पर मत फँस जाओ।"

ब्रह्मा स्वीकृति देकर वृद्ध ब्राह्मण के वेश में काशी गया। दिवोदास के दरबार में जाकर उसे आशीर्वाद दिया और कहा– "राजन, यदि तुम्हारी स्वीकृति हो तो मैं काशी में यज्ञ करूँगा। मगर विश्वेश्वर के बिना काशी की शोभा घटती जा रही है, उन्हें बुलाना उत्तम होगा।"

शिवजी को बुलाने के संबंध में दिवोदास ने कुछ नहीं कहा। ब्रह्मा ने काशी में दस अश्वमेधयज्ञ किये और वहीं रह गये।

ब्रह्मा को भी वापस न लौटते देख शिवजी ने प्रमथों को काशी भेजा। न मालूम काशी का महत्व कैसा था, प्रमथगण काशी में पहुँचते ही अपने लक्ष्य को भूल गये। उनमें से कपर्दि नामक व्यक्ति ने काशी में कपर्दीश्वर लिंग की स्थापना की।

मंदर पर्वत पर रहनेवाले शिवजी को काशी का समाचार बिलकुल न मिला। चिंतित होकर शिवजी ने विनायक को बुला भेजा और उसे सारी बातें समझाकर काशी नगर में भेज दिया।

विनायक ने काशी में पहुँचकर वहाँ पर अनेक उत्पात पैदा किये। वह डुंठिभट्टारक

नाम से लोगों के बीच घूमते उन्हें ज्योतिष बताने लगा। उसने यह अफ़वाह भी पैदा कर दी कि काशी के विनाश के दिन निकट आ गये हैं। इसके उपरांत वह दिवोदास के महल में पहुँचा। राजा के सभी प्रश्नों का सही समाधान देकर वह राजपुरोहितों में एक बन गया।

दिवोदास ने डुंठिभट्टारक से पूछा– "काशी में ये उत्पात क्यों हो रहे हैं?"

"राजन, मुझे लगता है कि आप को कुछ दिन तक काशी नगर को छोड़ दूर रहना उत्तम होगा। अट्ठारह दिन बाद उत्तर दिशा से एक ब्राह्मण आयगा और वह आप को उचित हितोपदेश करेगा।" डुंठिभट्टारक ने जवाब दिया।

इसके बाद शिवजी ने विष्णु को काशी में भेजा। विष्णु ने बुद्ध के रूप में काशी जाकर वहाँ के लोगों में नास्तिक मत, बौद्ध तथा जैन धर्मों का प्रचार किया और उनकी धर्मनिष्ठा का अंत किया। इसके उपरांत ब्राह्मण वेष धरकर विष्णु दिवोदास के पास गये। उसे आशीर्वाद दिया। दिवोदास ने उनसे पूछा–"महात्मा, देवता मुझे अनेक प्रकार से सता रहे हैं। मैं भी बहुत समय तक शासन करके वृद्ध हो चुका हूँ। आप बताइये कि मुझे मोक्ष की प्राप्ति कैसे होगी?"

"राजन, तुम काशी में लिंग की प्रतिष्ठा करो तो तुम अपने शरीर के साथ कैलास में चले जाओगे।" विष्णु ने समझाया।

विष्णु के सुझाव के अनुसार दिवोदास ने अपने पुत्र समरंजय का राज्याभिषेक किया, एक बड़ा मंदिर बनवाकर उसमें लिंग की प्रतिष्ठा की, इसके उपरांत अपने लिए आये हुए विमान पर सशरीर कैलास में चले गये। काशी को छोड़कर गये हुए सभी देवता लौट आये, तब शिवजी अपने वाहन नंदी पर सवार हो अपने सभी गणों को साथ ले काशी नगर में आ पहुँचे, तब जाकर उन्हें अपार संतोष हुआ।

१३१. "ट्रेवी फाउंटेन"

यह स्त्रोतस्विनी रोम नगर में है। उनका विश्वास है कि नगर से जानेवाला व्यक्ति यदि इस सरोवर में एक सिक्का डाल देता है, तो वह पुनः उस नगर में लौट आता है। इस रिवाज के कारण सरोवर में उतरकर सिक्के इकट्ठा करनेवाले युवक लाभ उठाते हैं। जल के ऊपर अंकित शिल्प में वरुणदेव उड़नेवाले रथ में चित्रित हैं।

Photo by D. N. Shirke
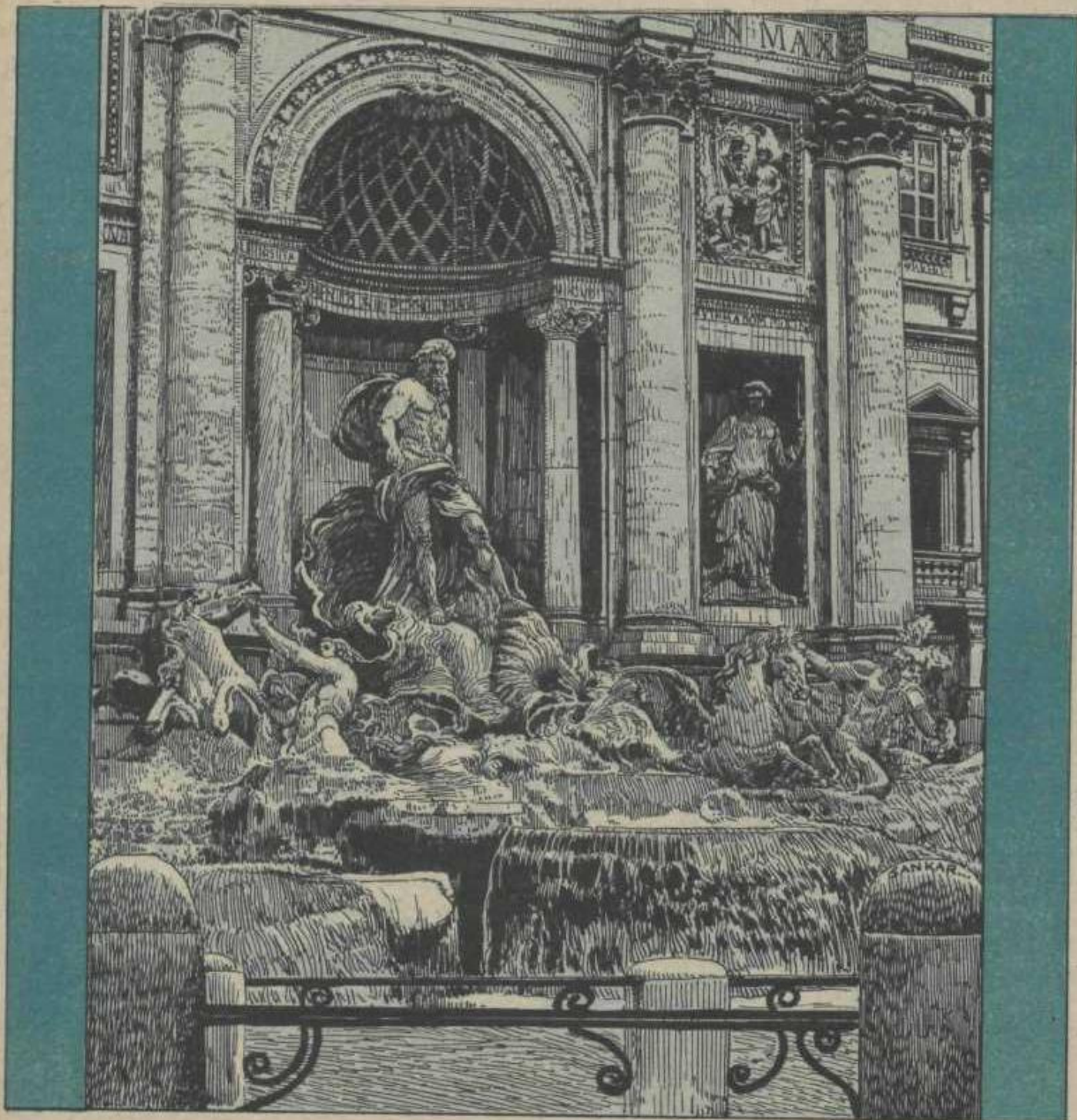
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

विद्या बुद्धि की प्रतिमा पावन !

प्रेषक :
कु. पारुल पांडेय,

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ दिसम्बर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फ़रवरी के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ:
चांदीगढ का सरोवर

तीसरा मुखपृष्ठ:
नैनीताल का सरोवर

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Photo by **P. R. Shinde**
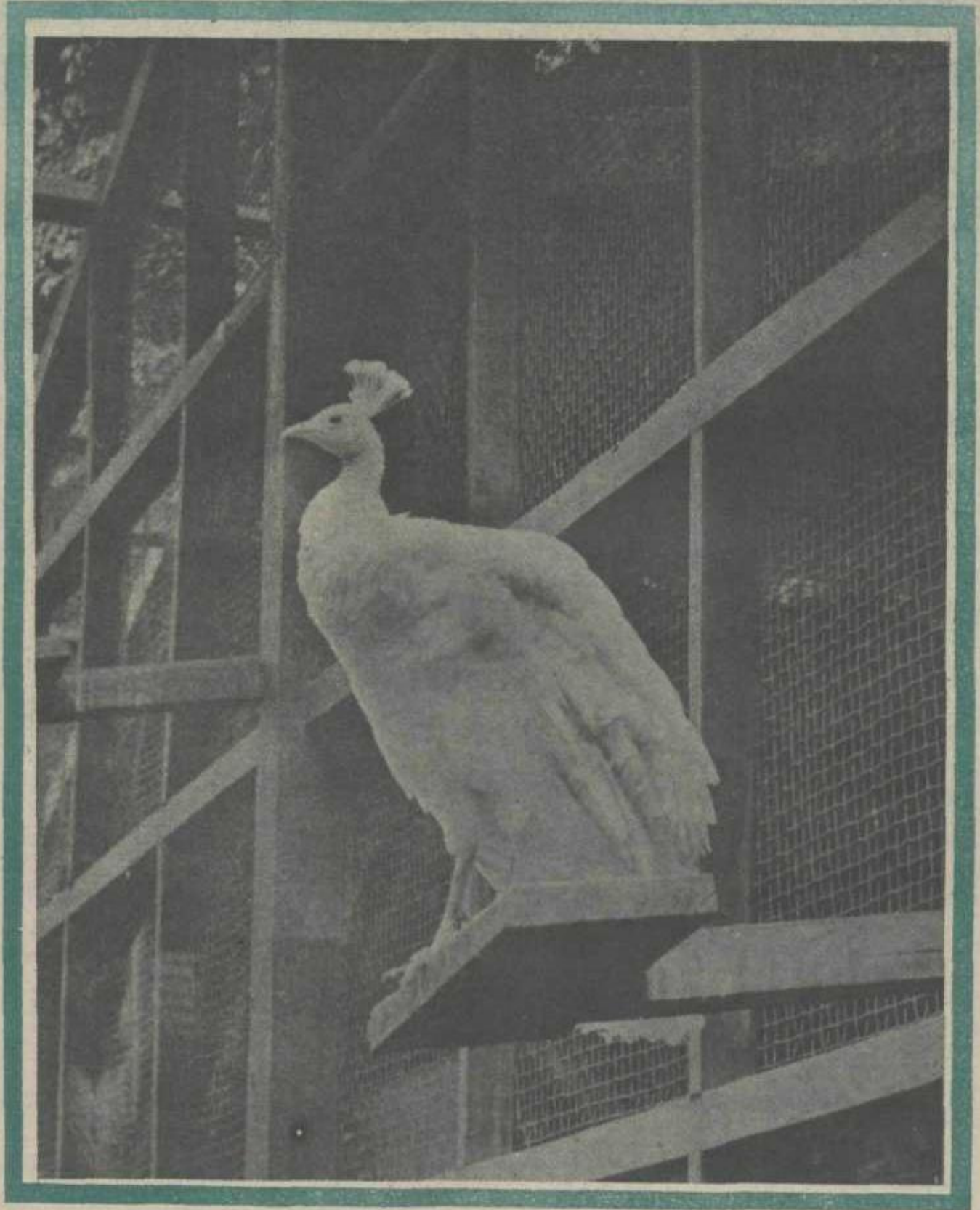
५०, नौगजा स्ट्रीट,
मेरठ शहर.

यहाँ बैठा देवी का वाहन !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

69

वाह!
कितना मीठा,
कितना मज़ेदार!
रंगबिरंग
कॅड्बरिज़
मिल्क चॉकलेट
जेम्स
नाचो-गाओ,
धूम मचाओ,
कॅड्बरिज़
जेम्स का
मज़ा उड़ाओ!
Cadbury's
GEMS
सिर्फ़
१ रु.
AIYARS-C.165 HN

वूलेन ब्लैंकेट्स और

यूनिसैक्स ट्वीड्स
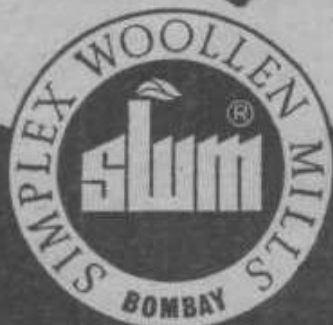
सिम्प्लेक्स

सिम्प्लेक्स वूलन मिल्स बम्बई

IMPRESSIONS

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-२६

बदन में दर्द?
मिनटों में आराम...

बदन का दर्द, सर्दी-जुकाम, सरदर्द और मोच के दर्द से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये अमृतांजन मालिश कीजिये। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बे में भी मिलता है।

AM 5982A

अमृतांजन
के ज़रिये!

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिए १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण!

अमृतांजन लिमिटेड

चिकलेट्स
मज़ेदार
चूइंग
गम
LEMON
Chiclets
12 PIECES
ORANGE
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
बच्चों देखो नया कमाल
चिकलेट के
जोकर की चाल
खा एक पर चिकलेट एक
बार आयगा
मज़ा अनेक
नाचो, गाओ, मचाओ शोर
मुझको और, मुझको और।"
Chiclets
लेमन
ऑरेंज
पेपरमिंट
टूटी-फ्रूटी

Photo by: **SURAJ N. SHARMA**